संजय की कलम से ..

अंतर्मुखी सदा सुखी

सुख और विलासिता के सभी भौतिक साधन होने पर भी आज का मानव अत्यधिक दुखी और अशान्त है, यहाँ तक कि रात्रि को सोने के लिए उसे नींद की गोली लेनी पड़ती है। यह मनुष्य की बहुत ही शोचनीय दशा हो गई है। उसकी हालत ऐसी है जैसे कि बाहर से कोई बहुमूल्य वस्त्र पहने हुए हो लेकिन अंदर से सारा शरीर भयानक एवं दर्दनाक घावों से भरा पड़ा हो। आज मनुष्य शरीर और शरीर के पदार्थों के सौन्दर्य में इठलाता फिर रहा है लेकिन उसकी आत्मा विकारों की अग्नि में झुलस रही है। आंतरिक व स्थायी आनन्द की प्राप्ति न होने के कारण वह क्षण-भंगुर व विनाशी मनोरंजन की खोज में ही भटकता रहता है।

जब वह अंतर्मुखी होकर अपने अंदर झाँकता है तो उसे सौन्दर्य, आनन्द और संगीत के स्थान पर कालिमा, विषाद और रुदन ही दिखलाई पड़ता है। अत: वह अपने से दूर भागता है और बाह्य सुखों की मृग-मरीचिका के पीछे ठोकरें खाता है।

यही कारण है कि वह आत्मिक सुख का रस नहीं ले पाता अर्थात् वह अंतर्मुखी न होकर बाह्यमुखी बना रहता है। ऐसे बाह्यमुखी मनुष्य को स्थायी शान्ति नहीं होती।

अंतर्मुखता का भावार्थ यह है कि मनुष्य अपनी आँखों से केवल वही दृश्य देखे, कानों से वही बातें सुने और मुख से वही वचन बोले जिससे देह के अंदर में स्थित आत्मा की उन्नति हो। वह कर्म करते हुए बुद्धि से अंतर-स्थित आत्मा की स्मृति में रहे। वह कर्मेन्द्रियों द्वारा बाह्य जगत में जो कुछ देख व सुन रहा है, उसे अंतर में स्थित आत्मा पर घटाये और अंतरात्मा की चेकिंग करता रहे अर्थात् आत्म-निरीक्षण करता रहे कि उसमें कोई विकार या संकल्प-विकल्प तो नहीं घुस आया है।

मनोवैज्ञानिक भी मानते हैं कि मन की अधिकांश शक्ति सुषुप्तावस्था में होती है। आत्म-चिन्तन के द्वारा ही उस शक्ति का जागरण हो सकता है। ऐसे जागरूक व्यक्ति के सारे अंतर्द्वन्द्व समाप्त हो जाते हैं। उसकी चेतना और अंत: चेतना में समस्वरता होती है। उसका मानस संगीतमय होगा तथा मनोरंजन के लिए उसे बाह्य साधनों की तरफ नहीं भागना पड़ेगा वरन् उसके अंदर ही आनंद का स्त्रोत फूट पड़ेगा और उसे मिलेगा अतीन्द्रिय आनन्द अर्थात् वह आनन्द जिसकी प्राप्ति बाह्य इंद्रियों के माध्यम से नहीं वरन् सीधे आनन्द के सागर परमात्मा से होगी। इसकी प्राप्ति का एक मात्र साधन अंतर्मुखता, आत्म-चिन्तन और ईश्वरीय चिंतन है। ❖

अमृत-सूची

- दशा सुधरे, दिशा बदले *(सम्पादकीय)* 4
- लेखकों से निवेदन 5
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के.. 6
- एक नज़र सतयुगी प्रकृति पर...8
- ग्लोबल हॉस्पिटल में 9
- ईश्वरीय सेवा में समर्पण 10
- 'पत्र' संपादक के नाम 13
- मैं और मातेश्वरी.....14
- स्मृति के क्षण *(कविता)* 17
- बीज का बड़प्पन.....18
- बाबा ने बनाया शिव शक्ति ...19
- अलौकिक पालना 20
- शिवबाबा की याद से.....21
- तेरे प्यार में हम..*(कविता)* 21
- झूठी प्रशंसा..... 22
- बनो फ़रिश्ते ब्रह्मा जैसे 23
- तू सकल विश्व *(कविता)* 26
- जब स्वयं में परिवर्तन.....27
- सचित्र सेवा समाचार..... 28
- मातृ-भाव का वरदान मिला ..30
- मुसीबत मजबूत बनाती है 31
- सचित्र सेवा समाचार..... 32
- अभी नहीं तो कभी नहीं 33
- व्यवहार कुशलता.....34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	90 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	90/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383
hindigyanamrit@gmail.com

सम्पादकीय ..✍

दशा सुधरे, दिशा बदले

किसी के पास बहुत धन है पर कुछ पेटी में जमा है, कुछ बैंक में पड़ा है, कुछ जेब में है पर क्या यह सारा अपना है? अपना तो उतना ही है जो ईश्वरीय कार्य में सफल हो गया या जीवन के आवश्यक निर्वाह में लग गया। जो धन जुर्माने में, डॉक्टर और वकील की फीस के रूप में देना पड़े वह तो व्यर्थ ही गया।

भोजन भी जो खाया उसमें उतना ही सार्थक है जो हज़म हो गया। जिसे गोलियाँ खाकर निकालना पड़े वह तो व्यर्थ ही गया। जीवन भी चाहे कितनी भी आयु लंबा हो पर सार्थक उतना ही है जितना ईश्वर-चर्चा, आत्म-चर्चा और परोपकार में सफल हुआ।

बुद्धि पर देह अभिमान का नशा

ईश्वर-चिन्तन और आत्म-चिन्तन में मन को लगाना चाहते हैं पर यह लग कहीं और जाता है। इसका अर्थ तो यह हुआ कि आत्मा का या बुद्धि का मन पर नियंत्रण नहीं। कई बार हम ऐसे लोगों को देखते हैं जिनका अपने शरीर पर नियंत्रण नहीं होता। वे पैर रखते कहीं हैं और रखे कहीं और जाते हैं, डगमगाते हुए चलते हैं। तब हमारे मुख से अनायास ही निकलता है कि कहीं इसने नशा तो नहीं कर रखा। यही बात डाँवाँडोल मन पर भी लागू होती है। यदि मन पर नियंत्रण नहीं तो अवश्य ही बुद्धि ने भी कोई नशा कर रखा है और यह नशा है देह के अभिमान का या काम, क्रोध, लोभ आदि विकारों का। नशों के वशीभूत आत्मा मन को नियंत्रित नहीं कर पाती। मन को नियंत्रित करने के लिए आत्मा को अपने स्वरूप में टिकना अनिवार्य है। देहभान से न्यारे होते ही मन, आत्मा के नियंत्रण में आ जाता है।

मन पर संस्कारों का प्रभाव

नियंत्रित मन ही मन्मनाभव हो सकता है। संसार की बातें तो उलझी हुई होती हैं, उनमें मन को लगाना अर्थात् मन को उलझाना है पर परमात्मा पिता तो ज्योतिबिन्दु रूप हैं, एक ही हैं तो एक का हिसाब रखना और बिन्दु पर मन टिकाना तो सबसे सरल साधना है। परंतु देखने में आता है कि कई आत्माओं को इस साधना में भारी मेहनत या बंधन महसूस होता है। वास्तव में जन्म-जन्म के संस्कारों का प्रभाव मन को अपने में जकड़े रखता है। वह जकड़न दिखती नहीं पर मन को मन्मनाभव होने नहीं देती। इस संबंध में एक सेठजी के जीवन की एक सच्ची घटना है। एक बार उनकी दुकान पर एक भिखारी भीख माँगने आया। उन्होंने कुछ पैसे भीख में दिये, फिर पूछा, सारे दिन में तुम कितने पैसे पा लेते हो? उसने कहा, यही कोई 25-30 पैसे। सेठजी ने कहा, मैं तुम्हारे लिए प्रतिदिन के 1 रुपये की व्यवस्था करा दूँगा यदि तुम मेरी दुकान के सामने बैठकर सुबह से शाम तक भगवान का नाम लो तो। भिखारी ने कहा, ठीक है, ले लिया करूँगा। अगले दिन वह सुबह दुकान पर पहुँच गया और भगवान का नाम उच्चारण करने लगा। चार दिन तक तो यह सिलसिला चला, फिर वह आना बंद हो गया। सेठ जी ने खोज-खबर की पर पता नहीं चला। एक दिन बाज़ार में उस भिखारी पर सेठजी की नज़र पड़ी तो उससे ना आने का कारण पूछा। उसने कहा, मैं भगवान के स्थान पर देवी का नाम स्मरण करूँगा। सेठ जी ने कहा, ठीक है और प्रतिदिन एक की जगह दो रुपये देने का वायदा कर लिया।

इसके बाद चार दिन लगातार आकर वह फिर लापता हो गया। मुनीम जी से पूछा तो उन्होंने कहा, उसे पैसे की अदायगी तो बराबर की जा रही थी। सेठ जी सोच में पड़ गये, फिर क्या कारण हो सकता है? सप्ताह बाद दुकान का एक सेवक उसे सेठ जी के सामने ले आया। भिखारी ने कहा, सेठ जी, भगवान या देवी का स्मरण करते मुझे अजीब घुटन महसूस होती

है, मैं अन्य कोई काम कर सकता हूँ पर यह नहीं, मुझसे बैठे नहीं रहा जाता। आप मुझे प्रतिदिन के सौ रुपये भी दें तो भी मैं यह कार्य नहीं कर सकता। बाद में सेठ जी ने एक महात्मा से इसका कारण जानना चाहा तो उसने कहा, जो कुछ संस्कारों, आदतों, यादों के विपरीत होता है उसे मन स्वीकार नहीं कर पाता है।

कमज़ोरी की तरफ मन का बहाव

शरीर में यदि कोई दर्द या बीमारी पैदा हो जाये तो अधिकतर उसकी पहचान यह होती है कि आत्मा का ध्यान बार-बार, ना चाहते भी उस अंग की ओर जाता है। जैसे मान लो घुटनों में दर्द है तो घुटने पर ध्यान केन्द्रित हो जाता है। दांत में दर्द होगा तो सारा ध्यान दांत पर केन्द्रित हो जायेगा। कहेंगे, पता नहीं, कुछ खाया नहीं जा रहा है, क्या हुआ है? बीमारी चाहे कुछ दिन की हो या दीर्घकाल की, आत्मा का ध्यान खींचती अवश्य है, विषय पर एकाग्र होने में बाधा डालती है। इसी प्रकार, मानसिक या आत्मिक कमजोरियों की निशानी भी यही है कि आत्मा अपने विषय से, लक्ष्य से खिसककर कमज़ोरी वाली बात के पास चुपके से पहुँच जाती है। बैठेंगे योग में और मन उड़ जायेगा उस तरफ जिसके प्रति आकर्षण या लगाव के भाव होंगे, फिर चाहे वह वस्तु हो या व्यक्ति हो। प्यारे बाबा ने कहा है, अब तो मन की उड़ान बार-बार शिवबाबा की तरफ होनी चाहिए परंतु मन रूपी पानी उन्हीं रास्तों पर बह जाता है जहाँ वह आज तक बहता आया है। वस्तु या वैभव या व्यक्ति की तरफ मन का गुप्त रूप से जाना, मन की कमज़ोरी है।

भटकते मन को स्वकल्याण और विश्व-कल्याण की दिशा

जैसे व्यर्थ बहते पानी को बाँध द्वारा सही दिशा दी जाती है इसी प्रकार कमज़ोरीवश भटकते मन को भी ईश्वरीय ज्ञान द्वारा स्व-कल्याण और विश्व-कल्याण की दिशा दी जाती है। **ज्ञान कहता है, जैसे जलविहीन, सूखी नदी में भटकने से प्यास नहीं बुझती, इसी प्रकार नैतिकता और आध्यात्मिक मूल्यों से सूख चुके इस विश्व की बातों या वस्तुओं या व्यक्तियों पर मन के मंडराने से मन की शान्ति नहीं मिल सकती। मन के सच्चे मीत, दिल को सुकून देने वाले दिलाराम तो एक ही परमपिता परमात्मा शिव हैं।** तो फिर क्यों न मन रूपी पतंगे को शिव-शमा पर बलिहार होने की दिशा दी जाये जिससे उसकी जन्म-जन्म की दशाएँ समाप्त हो जायें और वह नर से नारायण तथा नारी से लक्ष्मी बनने की सर्वश्रेष्ठ दिशा में अग्रसर हो।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

लेखकों से निवेदन

आपका भरपूर सहयोग 'ज्ञानामृत' को मिल रहा हे। आभार!

- जीवन-अनुभव के लेखों के लिए निमित्त शिक्षिका की स्वीकृति अवश्य लें। उनके हस्ताक्षर कराके भेजें।
- लेख और कवितायें साफ-साफ लिखें, खुला-खुला लिखें। यदि टाइप कराके भेजना चाहें तो आप पोस्ट द्वारा या ई-मेल atamprakash@bkivv.org पर भेजें। ज्ञानामृत का फोन्ट आकृति देव प्रियंका है, उसे प्राथमिकता दें। अगर अन्य किसी फोंट का उपयोग करते हैं तो ई-मेल करते समय या तो लेख की पीडीएफ फाइल भेजें या साथ में फोंट भेजें।
- अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता, फोन नंबर, ई-मेल, संबंधित सेवाकेन्द्र का नाम, जोन तथा टीचर का नाम भी अवश्य लिखें।
- जो भी रचना भेजें, उसकी एक कॉपी अपने पास अवश्य रखें। अस्वीकृत रचनायें वापस नहीं भेजी जायेंगी।

परमात्मा के गुणों और शक्तियों को अपने में धारण करना ही महान तपस्या है।

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

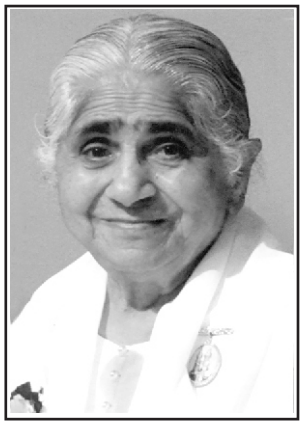

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... – सम्पादक

प्रश्नः- व्यर्थ बातें कैसे खत्म हों?

उत्तरः- जहाँ बात है वहाँ बाप नहीं और जहाँ बाप है वहाँ बात नहीं। निश्चय में विजय है। सच्चाई में सफलता है। बाबा हमारे साथ है तो डरने की बात नहीं। कभी नहीं कहना, बाबा साथ दो ना। भिखारी हो क्या? बाबा के साथ का अनुभव औरों को अनुभव करायेगा। उसने मुझे साथ दिया है, अनुभव औरों को हो रहा है। भगवान हमारा साथी है और ड्रामा पर चलने की शिक्षा दे रहा है। तो साक्षी होकर के पार्ट बजाओ।

प्रश्नः- हीरो एक्टर की विशेषता क्या होगी?

उत्तरः- जिसको हीरो पार्टधारी बनना है उसका जीवन हीरे मिसल हो। हीरा माना हीरो एक्टर। उसका सारा ध्यान डायरेक्टर पर होता है। डायरेक्टर क्या कहता है? वो औरों को भी नहीं देखता है। पब्लिक को भी नहीं देखता है। डायरेक्टर के डायरेक्शन पर चलता है। एक्टर माना जो खुद को देखे और बाप को देखे। बाप डायरेक्टर है। ड्रामा का क्रियेटर है। मुझ आत्मा को पार्ट बजाने के लिए फिक्स किया है।

प्रश्नः- चारों सब्जेक्ट्स में किस आधार से पास हो सकते हैं?

उत्तरः- बेहद में रहने से बेहद की बादशाही मिलेगी, ऐसे नहीं मिलेगी। वर्से के अनुभव से, लायक बनने से, अपनी जीवन यात्रा सफल करने से, निष्फल एक घड़ी, एक मिनट न जावे, एक पैसा न जावे। चारों सबजेक्ट्स में पास होने के लिए समय, संकल्प, श्वास, सम्पत्ति सब सफल करना है। फुल पास वही हो सकता है जिसकी कोई भी सबजेक्ट में मार्क्स कम न हों। ऐसे नहीं, सेवा में अच्छे हैं, धारणा में कम हैं, चारों ही सबजेक्ट्स में फुल मार्क्स चाहिएँ।

प्रश्नः- फरिश्ता बनने की सरलतम विधि समझाइये।

उत्तरः- जो भगवान के मुख से महावाक्य निकलते हैं, हो जाते हैं। सारे यज्ञ की हिस्ट्री को देखो। ब्रह्मा बाबा की कितनी महिमा करें। बाबा के हर संकल्प, वाणी, कर्म से, चेहरे से, चलन से बहुत सीखने को मिला है। इसमें हमको नकल करने का अक्ल चाहिए। बाबा में हमेशा चार रूप दिखाई देते थे – साकार, सम्पूर्ण ब्रह्मा, निराकार और नारायण। बाबा कभी-कभी नारायण की एक्ट करता था, बड़े नशे से चलता था। साकार में बाबा को देखा, कितनी सम्पूर्ण, सम्पन्न बनने की लगन रही। वो दृश्य मेरे सामने आता है, बाबा के सामने बहुत अच्छा लगता था। भगवान ने अर्जुन को गीता सुनाई, अभी वही भगवान हमें सामने बैठकर गीता सुना रहा है। फिर बाजू में जब बिठाया तो करेन्ट आने लगी। संगमयुग की इन घड़ियों में पुरानी बातों को छोड़ो, वह किचड़ा है, छी, छी है। कइयों की चलन से पुराना छूटता ही नहीं है। हम इतना फ्री हैं, खुशनसीब हैं। ईश्वरीय कुल के नियम और मर्यादाओं पर चलने से फरिश्ता बनना सहज है क्योंकि दूसरे सब बंधन छूट गये। कर्मबन्धन तोड़ो, आदतों को छोड़ो,

पुरानी बातों को भूलो। कल की बात भी याद न आये। याद हैं तो ईश्वरीय चरित्र याद हैं। भागवत, गीता स्मृति में हैं और सब बातें छूट जाती हैं, बस यही याद रहता है।

प्रश्नः- श्रापित बुद्धि के लक्षण क्या-क्या हैं?

उत्तरः- अभी ऐसी लहर फैले जो विश्व भर में कहीं भी, पर्सनल भी कोई विघ्न न हो। बाबा ने कहा है कि कोई विकार देकर फिर वापस लेते हैं तो श्राप मिल जाता है क्योंकि बाबा के साथ धर्मराज है ना, तो सदा हम देखें, धर्मराज हमारे सामने है। कोई गलती होगी, गुस्सा करेंगे तो श्राप मिल जायेगा। यह हमने प्रैक्टिकल में देखा है। कोई ने ऐसी गलती की तो जैसे श्रापित हो गये, बुद्धि चलेगी नहीं, बीमार पड़े रहेंगे। यज्ञ के लिए प्यार नहीं होगा। अभी भी कइयों की बुद्धि ऐसी हो जाती है।

प्रश्नः- श्रीमत की वैल्यु दिमाग तक रहती है, उसको दिल से स्वीकार कैसे करें?

उत्तरः- इसके लिए मन-बुद्धि को सदा ठीक रखो। जब तक मन-बुद्धि ठीक नहीं हैं तो दिल-दिमाग ठीक काम नहीं करते हैं। मैं आत्मा शांत हूँ, भगवानुवाच, ऐसा दिल से जो अनुभव करता है, उसमें दिमाग को ठीक करने की ताकत आती है। दिल से पुरुषार्थ करेंगे तो दिमाग ठीक काम करेगा। दिल में दुख होता है तो मन शांत हो नहीं सकता है, पर बुद्धि, मन को ठीक रखती है तो दिल अच्छा हो जाता है। दिल, दिलाराम के साथ तपस्या में बैठ जाये तो जैसा संकल्प करो वो साकार हो जाता है।

बाबा से जो भी खज़ाने मिले हैं वो सब पहले अपने में धारण कर, सभी प्राप्तियों से संपन्न बन, ईश्वरीय स्नेह से सर्व को सहयोग देते हुए बाबा के समीप लाना है। समीप आते ही बाबा के संग से बुद्धि की शुद्धि हो जाने से जो सुनते हैं वो अच्छा लगने लगता है और अनुभव भी होने लगता है। बाबा ने ईश्वरीय आकर्षण से हमको खींच लिया है और प्यार से भूँ-भूँ कर-करके अपने समान बना रहा है। बाबा के स्नेह की शक्ति से पहले हम अपनी नेचर को चेंज कर लेवें। नहीं तो कइयों को सिर्फ ज्ञान अच्छा लगा है और अन्य को ज्ञान देते भी रहते हैं पर वो थके हुए होते हैं क्योंकि वो रूखा-सूखा ज्ञान देते हैं।

प्रश्नः- दादी, अभी बाबा ने इशारा दिया है, समय बहुत नाजुक आ रहा है इसलिए सबको सकाश देना है, उसकी विधि थोड़ी समझाइये?

उत्तरः- वर्तमान समय लक्ष्य है कि सबको संदेश देना है, कोई भी कोना रह नहीं जाये, इसके लिए अब न सिर्फ भाषण से परंतु मैसेन्जर की स्थिति में स्थित हो भासना के साथ संदेश देते जायें तो वो इन कानों से संदेश सुनने के साथ-साथ सकाश का भी अनुभव करेंगे। भल संदेश एक्यूरेट याद न भी रहे पर संदेशी की सूरत नहीं भूल सकेंगे। हमारी शुभ भावना के वायब्रेशन ही सकाश का काम करते हैं। जैसे बाबा के ज्ञान से प्रकाश मिला वैसे सकाश भी मिलती है। बच्चे हैं तो बाबा के प्यार की शक्ति मिलती है, हिम्मते बच्चे को बाबा बहुत मदद करता है और आशीर्वाद भी देता है। सकाश माना संकल्प में हो कि जैसे कोई करा रहा है...।

प्रश्नः- अशान्ति और आतंक के इस माहौल में हम योग का दान देकर लोगों को भय और चिंताओं से कैसे मुक्त कर सकते हैं?

उत्तरः- शिवबाबा तो परमपिता है, ब्रह्मा बाबा ग्रेट-ग्रेट ग्रेण्ड फादर है तो हमारे अंदर भी आना चाहिए कि हम पूर्वज हैं जिससे सबको लगे कि ये हमारे रक्षक हैं। जहाँ अशान्ति है वहाँ हमारे से शान्ति फैले..हमें बाबा से जो प्राप्तियाँ हुई हैं, उससे जो अनुभव हुआ है वो और आत्माओं को मिले। इस भावना के साथ संकल्प करें तो सचमुच वहाँ शान्ति फैल जाती है। जैसे मधुबन का वायुमण्डल पावरफुल है, ऐसे हम जहाँ भी जायें, वहाँ का वायुमण्डल पावरफुल हो जाये। इसके लिए बाबा कहते हैं, अनेक प्रकार के अलबेलेपन को छोड़ो, व्यर्थ बातों को छोड़ो। ❖

बहुत नहीं लेकिन बहुत
बार पढ़ने से ज्ञान होता है

एक नज़र सतयुगी प्रकृति पर

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सह-मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी को, परमपिता परमात्मा शिव तथा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा बाल्यकाल से ही दिव्य-दृष्टि का वरदान प्राप्त है। इस वरदान के बल से वे आत्मिक रूप में सूक्ष्मलोक में जाकर ईश्वरीय ज्ञान के गुह्य राज़ों को जानने के साथ-साथ आने वाली नई दुनिया के नज़ारे भी स्पष्ट रूप से देखती हैं और ब्रह्मावत्सों की आध्यात्मिक उन्नति अर्थ उनका वर्णन भी करती हैं। विदेशी भाई-बहनों के आग्रह पर ब्र.कु.जयन्ती बहन ने दादी जी से सतयुगी प्रकृति के संबंध में कुछ प्रश्न पूछे, दादी जी ने जो उत्तर दिए, उनका सारांश यहाँ दिया जा रहा है – सम्पादक

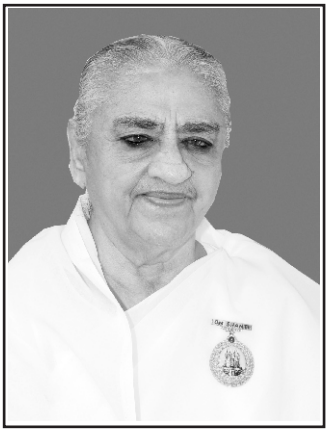

प्रश्नः- देवता का अपने शरीर के साथ किस प्रकार का संबंध होगा?

उत्तरः- सतयुगी प्रकृति सतोगुणी होगी, इस कारण बीमारी आदि नहीं होगी। शरीर के प्रति यह दृष्टि रहेगी कि मैं पुरुष हूँ, यह प्रकृति है, मैं मालिक हूँ। जैसे कोई सही मालिक होता है तो वो अपने साथियों को बहुत अच्छा चलाते हैं, इसी प्रकार मालिक होकर प्रकृति को प्यार से चलायेंगे। इस कारण प्रकृति भी कभी धोखा नहीं देगी।

प्रश्नः- क्या शरीर को कभी थकान नहीं होगी?

उत्तरः- थकान किसी कारण से होती है। ज्यादा काम करना, बीमारी होना, मन से किसी से तंग होना, इन कारणों से थकान होती है। ये सब कारण वहाँ होंगे नहीं, प्रकृति से ठीक रीति से व्यवहार करने के कारण खुद भी सुखी रहते हैं, प्रकृति भी सुख देती है।

प्रश्नः- स्वर्ग के चित्रों में सुन्दर-सुन्दर बगीचे दिखाये जाते हैं मानो माली ने मेहनत करके ठीक किये हों। क्या वहाँ सब तरफ ऐसे बगीचे ही होंगे या वन, खुले मैदान जहाँ अपने-आप फूल उगते रहें, इस प्रकार से भी प्रकृति होगी?

उत्तरः- होंगी। कहीं मैदान होगा, कहीं बगीचा, पहाड़, नदी होगी। सब मिक्स होंगे। मानवात्मायें जो चाहती हैं, वो सब होगा। छोटे-छोटे पहाड़ भी मोर आदि पंछियों के आकार में होंगे। पानी के तालाब भी होंगे। वे भी डिजाइन वाले होंगे और सजे हुए होंगे।

प्रश्नः- क्या फूल तोड़ेंगे?

उत्तरः- कार्य के लिए तो तोड़ सकते हैं परंतु ऐसे ही अपनी आसक्ति से, गलत भाव से कोई नहीं तोड़ेगा।

प्रश्नः- क्या कोई पेड़ों को काटेगा?

उत्तरः- सुन्दर आकार देने के लिए हल्की-सी काट-छाँट कोई करे तो भले, पर यूँ जोश में आकर कोई नहीं काटेगा। वहाँ कोई किसी को दुख देगा नहीं और खुद दुखी होगा भी नहीं इसलिए जानबूझकर काटने की कोई बात नहीं है।

प्रश्नः- खाना किस प्रकार का होगा?

उत्तरः- खाना तो खायेंगे पर तला हुआ नहीं होगा। सतोगुणी खाना बनेगा। तत्व सतोगुणी होने के कारण भोजन में स्वाभाविक स्वाद होगा। सोलार ऊर्जा का बहुत प्रयोग होगा। खराब मौसम कभी होगा नहीं इसलिए सूर्य अपना कार्य बिना बाधा के करेगा।

प्रश्नः- यहाँ हम योग से आत्मा में बल भरते हैं, भोजन से शरीर में बल भरते

हैं, वहाँ आत्मा में एनर्जी कहाँ से आयेगी?

उत्तर:- वहाँ आत्मिक स्मृति तो है ना। भले ही ज्ञान का विस्तार नहीं जानते हैं पर आत्मिक स्मृति में मालिक होकर रहते हैं। मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, यह अभ्यास नहीं करते पर जैसे हम जानते हैं, मैं मनुष्य हूँ, ऐसे वे भी जानते हैं कि मैं आत्मा हूँ, प्रकृति का मालिक हूँ। वहाँ तन तंदुरुस्त होगा, रोज़ के खाने से ही तन को ताकत मिलेगी। विशेष कुछ खाने की आवश्यकता नहीं होगी। किसी भी प्रकार की दवाई-टेबलेट नहीं होगी। खाना ही ताकत वाला होगा।

प्रश्न:- बिजली कैसी होगी?

उत्तर:- सोलार से भी बिजली बनेगी, वैसे भी बनेगी। दोनों प्रकार की बिजली होती है लेकिन बिजली कभी दुख नहीं देगी, दुर्घटना नहीं करेगी। चाहिए तब ना हो, ऐसी कोई दुख देने की बात नहीं होगी। प्रकृति अपने नियंत्रण में होगी। अभी जो हम प्रकृति को नियंत्रित करते हैं उसी का फल हमें वहाँ मिलेगा।

प्रश्न:- फूलों के रंग कैसे होंगे?

उत्तर:- जैसे यहाँ फूलों के रंग होते हैं वहाँ भी ऐसे रंग होंगे। कोई नया रंग नहीं होगा पर कोई मुरझाया हुआ फूल नहीं होगा। किसी का रंग डिम नहीं होगा, सब आकर्षण से भरपूर होंगे।

प्रश्न:- आज मैं धरती पर पाप करती हूँ या मैं सोचती हूँ कि मुझे पाप नहीं करना तो क्या उसका असर मेरे आज के आध्यात्मिक पुरुषार्थ पर पड़ता है?

उत्तर:- अगर किसी को भी दुख देंगे तो असर तो होगा ही। प्रकृति या मनुष्य किसी को भी दुख ना देना, यह हमारा फर्ज़ है।

प्रश्न:- अभी संगमयुग पर क्या प्रकृति का सौन्दर्य देखने जाएँ?

उत्तर:- आसक्तिवश नहीं, शरीर के हिसाब से अनिवार्य है तो भले जायें। इस आसक्ति से ना जायें कि प्रकृति हमें सुख दे।

प्रश्न:- सतयुग में सब स्वस्थ होंगे पर क्या संगम में मुझे शरीर को ठीक रखने के लिए खास ध्यान देना पड़ेगा?

उत्तर:- तन को ठीक रखें, वह राइट है पर इसमें ममता हो जाये और इसी में लगे रहें (शरीर रूपी प्रकृति को ठीक करने में) तो वह रांग है। हम योग करते हैं तो प्रकृति (शरीर) को भी बल मिलता है। योग, दवाई जैसा कार्य कर सकता है। बाबा कहते, तन को जो चाहिए वो दो पर आसक्ति से नहीं।

प्रश्न:- दादी प्रकाशमणि जी के प्रति एक भोग के संदेश में बाबा ने कहा था, पाँच तत्व भी दादी की आत्मा का अभिनन्दन करने आये थे, इसका क्या अर्थ है?

उत्तर:- दादी कभी भी किसी भी प्राकृतिक दुर्घटना में हलचल में नहीं आती थी। ऐसे समय पर और ही सबको शांत करती थी। दादी द्वारा यहाँ प्रकृति को बल मिला तो उसका रिटर्न देने पाँचों तत्व हाज़िर हुए। दादी भले दवाई भी लेती थी और आवश्यकता प्रमाण शरीर को जो चाहिए वह सब देती थी पर वशीभूत होकर नहीं। दर्द की फीलिंग के कारण नहीं। ❖

ग्लोबल हॉस्पिटल में महत्त्वपूर्ण चिकित्सा सर्जरी कार्यक्रमों की जानकारी

घुटने व कूल्हे के जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी सुविधा
(Regular Knee and Hip Replacement Surgery)
दिनांक : 29, 30 जून तथा 1, 2 जुलाई
सर्जरी : डॉ. नारायण खण्डेलवाल, मुम्बई से कुशल व अनुभवी सर्जन
(Trained in U.K., Australia and Germany)
पूर्व जाँच के लिये केवल घुटने व कूल्हे के ऑपरेशन के इच्छुक रोगी संपर्क करें –
डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, फोन नं. 09413240131
फोन: (02974) 238347/48/49 **वेबसाइट:** www.ghrc-abu.com
फैक्स: 238570 **ई-मेल:** drmurlidharsharma@gmail.com

ईश्वरीय सेवा में समर्पण समारोह की आवश्यकता

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

परमपिता शिव परमात्मा ने सृष्टि पर दिव्य अवतरण ले ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की। स्थापना के समय पर अनेक बहन-भाइयों ने परिवार सहित अपना जीवन समर्पित किया जिस कारण हैदराबाद के सिंधी परिवारों में तहलका मच गया कि ब्रह्माकुमारियाँ घर-बार छुड़ाती हैं। उस समय समाज के लोगों ने समर्पणता के श्रेष्ठ पहलुओं को समझा नहीं था और घर-गृहस्थ में रहते हुए साधारण जीवन व्यतीत करना, इसे ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। इसलिए उन्होंने अफवाह फैला दी कि ब्रह्माकुमारियाँ घर-बार छुड़ाती हैं।

सन् 1952 में मेरी लौकिक माताजी ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आई। हमारा सारा परिवार ईश्वरीय ज्ञान में चलने लगा और हमारा जीवन परिवर्तन होता रहा। लौकिक माताजी व दो बहनों को इच्छा हुई कि हम मधुबन (माउंट आबू) जायें और ब्रह्मा बाबा से मिलें परंतु उनके सामने भी समाज का डर था जो यह मानता था कि ब्रह्माकुमारियाँ घर-बार छुड़ाती हैं। उन्होंने एक युक्ति रची और रिश्तेदारों को कहा कि हम अंबाजी यात्रा करने के लिए जा रहे हैं। इस प्रकार वे आबू में आईं और ब्रह्मा बाबा तथा अन्य यज्ञवत्सों से मिलने का सौभाग्य मिला। ब्रह्मा बाबा ने मुलाकात में कहा, ये तीनों पहला-पहला फल हैं जिसे बहनों ने ईश्वरीय सेवा करके बाबा के बगीचे में लाया है। विदाई के दिन मेरी माताजी ने ब्रह्मा बाबा को बताया कि मैं अंबाजी यात्रा का बहाना बनाकर आई हूँ। तब ब्रह्मा बाबा ने वहाँ का प्रसाद रिश्तेदारों के लिए मँगवाकर माताजी को दिया।

समाज में फैली इस भ्रांति को कैसे दूर किया जाये, इस बारे में मेरे मन में संकल्प चलते थे। मुंबई में जब ब्रह्मा बाबा आये थे तो शंकर सागर मकान में ठहरे थे। मैं मेरे एक सिंधी क्लाइंट के साथ शंकर सागर के कम्पाउंड में पहुँचा। वहाँ मेरे क्लाइंट ने फोन पर अपनी पत्नी को कहा कि मैं रमेश भाई के साथ ब्रह्माकुमारीज़ में जा रहा हूँ। अगर मैं एक घंटे के अंदर वापस नहीं आया तो आप शंकर सागर मकान में आना और ज़बर्दस्ती मुझे यहाँ से ले जाना। वह करोड़पति सिंधी व्यापारी भी उस समय मानता था कि ब्रह्माकुमारीज़ में जो जायेंगे तो वापस घर नहीं आयेंगे।

ईश्वरीय ज्ञान का फैलाव करने के लिए योग्य शिक्षिका बहनें चाहिएँ। इसलिए उन्हें ईश्वरीय सेवार्थ जीवन समर्पण करना आवश्यक है। इन बहनों के त्याग, तपस्या और समर्पण के आधार पर ही इस विश्व विद्यालय का कारोबार इतना फैला हुआ है। इसलिए मेरा विचार चलता रहा कि कैसे घर-बार छुड़ाने की भ्राँति को दूर किया जाये।

सन् 1958 की बात है, मैं अपने एक रिश्तेदार के साथ इस भ्रांति के संबंध में चर्चा कर रहा था। उन्होंने बताया कि जैन धर्म में संन्यास लेने वालों को सार्वजनिक समारोह द्वारा दीक्षा दी जाती है और उन्हें बहुत ऊँची दृष्टि से देखा जाता है। आप भी घर-बार छोड़ने को आध्यात्मिक स्वरूप दें तो यह भ्राँति दूर हो सकती है। मैंने भी इस बात का अनुभव किया है। मेरा एक 72 वर्षीय क्लाइंट बड़े सुखी परिवार से था, एक दिन वह निमंत्रण-पत्र देने मेरे लौकिक ऑफिस आया जिस पर लिखा था – दीक्षा समारंभ। मैंने पूछा तो उसने बताया कि जन्म-मरण के चक्कर से बचना हो तो जैन धर्म में यह मान्यता है कि घर-बार छोड़कर दीक्षा ले लेनी चाहिए। समारंभ में सब रिश्तेदारों के सामने मैं दीक्षा लेकर जैन संन्यासी बन जाऊँगा।

मेरे लौकिक रिश्तेदार ने भी यही कहा कि आप भी इसी प्रकार का कोई आध्यात्मिक समारंभ शुरू करो। दीक्षा लेने वाली बहनें और उनके

रिश्तेदार उसमें मुख्य हों और बहनें सबके सामने अपने विचार प्रकट करें कि हम स्वेच्छा से समर्पित हो रहे हैं। इससे यह सिद्ध हो जायेगा कि ब्रह्माकुमारीज़ में मजबूरी से घर-बार नहीं छुड़ाया जाता है किंतु स्वेच्छा से और एक आध्यात्मिक ज़रूरत के हिसाब से जीवन को समर्पित किया जाता है। तब मैंने ब्रह्मा बाबा को पत्र लिखा कि हम समर्पण समारोह का कार्यक्रम रखें जिससे सबको यह संदेश मिले कि ये बहनें स्वेच्छा से और माँ-बाप की स्वीकृति से अपने जीवन को प्रभु समर्पित कर रही हैं। ब्रह्मा बाबा ने मुझे उत्तर दिया कि बच्चे, तेरी बात तो अच्छी है परंतु मम्मा अभी ईश्वरीय सेवा पर निकली है, जैसे ही वे वापस आयेंगी, हम आपस में विचार करके नक्की करेंगे कि ऐसा कौन भाग्यशाली है जिसका पहले-पहले समर्पण समारोह हो सकता है। बाद में मातेश्वरी जी के साथ चर्चा करके ब्रह्मा बाबा ने मुझे पत्र लिखा कि बच्चे, अमृतसर में एक भाई आता है जिसको सब मास्टरजी कहते हैं और उनकी तीन बच्चियाँ (उनमें से एक राज बहन, जालंधर) समर्पित जीवन व्यतीत कर रही हैं तो उनका समर्पण समारोह करें।

इस प्रकार पहला-पहला समर्पण समारोह अमृतसर में दादी चंद्रमणि की अध्यक्षता में हुआ। मास्टरजी का सारा परिवार समर्पण समारोह में आया और सबके सामने बहनों ने अपने विचार प्रकट किये कि हम सभी स्वेच्छा से अपना जीवन समर्पित कर रही हैं। माँ-बाप ने भी बताया कि हम स्वेच्छा से अपनी बच्चियों को स्वीकृति दे रहे हैं। समारोह में सब रिश्तेदार भी आये, सबने सौगातें दी और बहुत अच्छा आध्यात्मिक वायुमण्डल फैल गया। यह सारा समाचार फोटो सहित ब्रह्मा बाबा के पास आया। बाबा ने मेरे पास भेजा और लिखा कि बच्चे, आपकी राय से जो समर्पण समारोह हुआ, उसका सब पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा, ऐसा समर्पण समारोह हर जगह होना चाहिए। परिणामरूप समर्पण समारोह कई जगह होते रहे और धीरे-धीरे घर-बार छुड़ाने की भ्रांति दूर होती गई।

मेरे उस सिंधी क्लाइंट की भ्रांति भी दूर हुई। एक बार उन्होंने मुझे फोन किया कि हम भाइयों के बीच बहुत हंगामा चल रहा है, मुझे शांति चाहिए। मैंने उन्हें माउंट आबू पांडव भवन आने का निमंत्रण दिया। वे खुशी-खुशी अपनी युगल के साथ आये और ईश्वरीय शांति की अनुभूति करके गये। दूसरे वर्ष भी वे आये, तो मैंने उन्हें कहा कि आपको तो ब्रह्माकुमारीज़ का जादू लग गया है। तब उन्होंने कहा कि बहनों के समर्पण समारोह से मेरी कई भ्रांतियाँ दूर हुई हैं और मुझे दो बार माउंट आबू आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैंने उन्हें हँसी में कहा कि अगर आपको सदा यहाँ रहने का सौभाग्य मिले तो क्या करेंगे? तो उन्होंने भी हँसकर कहा कि ज़रूर रह जाऊँगा।

एक बार मधुबन में अखबार वाले आये हुए थे, उसी समय वहाँ समर्पित कन्याओं की ट्रेनिंग हो रही थी। उस पत्रकार ग्रुप में से कई यह मानते थे कि ब्रह्माकुमारियाँ आर्थिक या अन्य मजबूरी के कारण समर्पित होती हैं। तब हमने अखबार वालों के सामने ही ट्रेनिंग में आई हुई बहनों को पेश किया। अखबार वालों ने उनसे प्रश्न पूछे और एक ने तो यह भी पूछा कि आपके माँ-बाप के पास आपकी शादी के लिए आवश्यक दहेज देने की क्षमता नहीं थी, क्या इसलिए आप ब्रह्माकुमारी बनी हो? तब सभी बहनों ने अपना दृढ़ संकल्प बताया कि हम स्वेच्छा से अपने माँ-बाप की स्वीकृति से ही समर्पित हुई हैं। बहनों के जवाब से उनकी कई भ्रांतियों का निवारण हुआ। उन्हें समझ में आया कि ये बहनें पढ़ी-लिखी, सम्मानित व संपन्न परिवारों की हैं। इनके जीवन समर्पित करने के पीछे ईश्वरीय सेवा की लगन और त्याग-तपस्या की दृढ़ता है, लौकिक परिवार की सहमति और सहयोग है। माँ-बाप और रिश्तेदार शादी में जैसे धन और जेवर सौगात

रूप में देते हैं, ऐसे ही समर्पण समारोह में भी सौगात देते हैं।

एक बार आबू में जयपुर की दो कन्याओं का समर्पण समारोह था। राजस्थान के तत्कालीन गवर्नर महामहिम एम.चेन्नारेड्डी भी समर्पण समारोह में हाज़िर थे। समारोह के समय मैं उनके बाजू में ही बैठा था और उन्हें बता रहा था कि यह एक अलौकिक विवाह समारोह है जिसमें इन कन्याओं ने निराकार परमात्मा शिव को परमपति के रूप में वरण किया है तथा उनकी श्रीमत पर चलते हुए उनके सब आत्मा बच्चों की ज्ञान द्वारा पालना और सेवा का शुभ संकल्प लिया है। भ्राता चेन्नारेड्डी जी ने देखा कि लौकिक रिश्तेदार बहुत खुशी से दोनों कन्याओं को सौगात आदि दे रहे हैं। समारोह के बाद जब वे वापस राजभवन गये तब वहाँ से दस हज़ार रुपये भेजे और फोन पर कहा कि मैं भी जयपुर का हूँ, इस नाते से बच्चियों का रिश्तेदार हूँ। यह राशि आप स्वीकार करना और बच्चियों को दे देना। मैं जानता हूँ कि आप सरकार का धन ईश्वरीय सेवा में लेते नहीं हैं और कानून की कई मर्यादायें भी हैं। अपनी तनख्वाह में से ही मैंने ये दस हजार रुपये भेजे हैं। बाद में तो कई जगह पर भाइयों के भी समर्पण समारोह हुए और ईश्वरीय सेवा में इन समारोहों का स्थान पक्का हो गया।

एक रमणीक बात बताता हूँ। अहमदाबाद में महादेव नगर सेवाकेन्द्र के द्वारा कुछ बहनों का समर्पण समारोह था। दादी प्रकाशमणि सहित सभी दादियाँ वहाँ उपस्थित थीं। उस समर्पण समारोह में मैं स्टेज सेक्रेटरी था। मेरे मन में एक संकल्प आया और मैंने वेदांती बहन तथा चंद्रिका बहन से पूछा कि क्या उनका समर्पण समारोह हुआ है? तो वेदान्ती बहन ने कहा कि हम तो बूढ़े हो गये हैं, अब इस उम्र में कौन हमारा समर्पण करेगा? मैंने मन में सोच लिया कि इन्हें हम सरप्राइज देंगे। मैंने वहाँ की व्यवस्थापक बहन से पूछा कि आपके पास समर्पण के लिए एक्स्ट्रा सामान चुनरी आदि है? अगर है तो दो बहनों के लिए लेकर आयें। फिर मैंने ऊषा बहन को इशारे से बुलाकर कहा कि वेदांती बहन और चंद्रिका बहन का शृंगार कर दो। फिर मैंने माइक पर एनाउंस करके दोनों बहनों के माँ-बाप और भाई-भाभी को बुलाया और सारी सभा को हर्षोल्लास का समाचार दिया और इस प्रकार उस समर्पण समारोह में चार चाँद लग गये।

समर्पण समारोह के बारे में मुझे पहले से ही थोड़ा विशेष लगाव था। सन् 1977 में मुंबई में कांफ्रेंस हुई, जिसका थीम था – Future of Mankind. उसके लिए मैंने पेपर लिखा जो कांफ्रेंस के सोविनियर में प्रकाशित हुआ। उसका शीर्षक था 'समर्पणता के द्वारा संपूर्णता'। मैं मानता हूँ कि समर्पणता से ही जीवन की संपूर्णता हो सकती है। मैंने उसमें लिखा था कि जैसे एक नदी जब समुद्र में विलीन हो जाती है तो उसका जीवन सफल हो जाता है, इसी प्रकार से जब हम ईश्वरीय सेवार्थ अपने जीवन को समर्पित करते हैं तो हमारा जीवन भी संपूर्ण सफल हो जाता है।

हम सबके सामने आदर्श रूप में तो ब्रह्मा बाबा का समर्पित जीवन है कि कैसे उन्होंने अपने तथा अपने परिवार को यज्ञ में समर्पित किया तथा इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की और आज उनके द्वारा स्थापित यह विश्व विद्यालय 137 देशों में फैल गया है। कोलकाता का बोटेनिकल गार्डन का वटवृक्ष तो इतना नहीं फैला जितना ब्रह्मा बाबा द्वारा प्रस्थापित मानवीय वटवृक्ष फैल गया है। हमारे दैवी परिवार के नये फूलों अर्थात् बहन-भाइयों को यह पुराना इतिहास मालूम नहीं है कि कैसी-कैसी समस्यायें पार करके हमारी बहनों ने ईश्वरीय सेवायें की हैं। उम्मीद है कि यह लेख पढ़कर कई कन्यायें जो दुविधा में होती हैं कि हम समर्पण हो जायें या नौकरी करें, को सच्चा मार्गदर्शन मिलेगा और वे समर्पित हो सेवाकेन्द्रों पर अपना भाग्य बनाने के पुरुषार्थ में लग जायेंगी। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

मार्च, 2012 अंक में प्रकाशित लेख बहुत अच्छे लगे। 'सत' रूपी तप सम्पादकीय लेख मुझे बेहद पसंद आया। मैं पिछले 30 सालों से ज्ञानामृत का अध्ययन करती आ रही हूँ। मुझे यह लेख इतने सालों में सर्वश्रेष्ठ लगा। इस लेख से आत्मिक शान्ति मिली। मैं इसको रोज़ रात को पढ़कर सोती हूँ। वास्तविकता यह है कि मेरे पति का 22 फरवरी, 2012 को देहांत हो गया था। मुझे उनके निधन से जो शोक हुआ, इस निबंध से मुझे बहुत-बहुत शान्ति मिल रही है। मार्च महीने की पत्रिका के लेख बहुत ही अच्छे हैं – संजय की कलम से 'बड़ा कौन', 'क्रोध से छुटकारा', 'सहनशक्ति', 'मीठी वाणी', 'अहंकार से होता है पतन' आदि।

– निर्मला अग्रवाल,
डिब्रुगढ़ (आसाम)

फरवरी 2012 के अंक में 'शिवरात्रि – महानतम पर्व' लेख में मुझे पहली बार मालूम चला कि शिवरात्रि से संबंधित रस्म-रिवाजों का क्या रहस्य है। जैसे कि लस्सी चढ़ाने की क्रिया धीरे-धीरे आत्मा का ध्यान परमात्मा की ओर आकर्षित एवं एकाग्र करने के समान है। बेलपत्र चढ़ाने का तात्पर्य है कि हम आत्मायें परमात्मा पर बलि चढ़ें अर्थात् उन्हीं द्वारा बताये गये मार्ग का अनुसरण करें। वास्तव में संजय की कलम से लेख अपनी अद्वितीय छाप छोड़ता है। 'मेरा बाबा आ गया' लेख में बहुत ही रुचिकर और ज्ञानवर्द्धक बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया। शिवबाबा यानि स्वयं परमपिता परमात्मा जो आज हमारे बीच हैं, संपूर्ण विश्व की आत्माओं के बाबा हैं। आज से 60-70 वर्ष पहले के बच्चे अपने पिता को वास्तव में बाबा ही तो कहा करते थे। उनके अवतरण से अभिभूत हो आज लाखों कंठ गा रहे हैं – मेरा बाबा आ गया। साकार में ब्रह्मा बाबा और मम्मा द्वारा पले हमारे आदरणीय भ्राता रमेश शाह जी द्वारा लिखित 'पुरुषोत्तम संगमयुग में तनावमुक्त रहने की युक्तियाँ' पढ़ा, बहुत-बहुत अच्छा और रुचिकर लगा। वास्तव में शिवबाबा ने कई बार अव्यक्त मुरलियों में कहा है, नथिंग न्यू अर्थात् जो पाँच हज़ार वर्ष पहले हुआ, वही अब रिपीट हो रहा है। इसलिए नो टेंशन बट आलवेज़ अटेन्शन। ज्ञानामृत हर आत्मा में जान डालने का एक सराहनीय कार्य कर रही है।

– ब्र.कु.प्रवेश, गोवर्धन (मथुरा)

ज्ञानामृत पत्रिका मन की गहराइयों को स्पर्श करने वाली, जीवन जीने की नई राह, नई दिशा प्रदान करने वाली महत्वपूर्ण पत्रिका है, जो सकारात्मक सोच की ओर प्रेरित करती है। मार्च 2012 के अंक में 'संजय की कलम से – बड़ा कौन' पढ़कर मेरा मानस गहन चिंतन की ओर अग्रसर हुआ और मैंने यही पाया कि व्यक्ति को नम्रता और मधुरता को ध्यान में रखते हुए पुरुषार्थ करना चाहिए। स्वयं की प्रशंसा एवं बड़ाई का अहम् न रखकर अपने सद्व्यवहार व आचरण से संतुष्ट होना चाहिए।

जानकी दादी ने, दिये गये प्रश्नों के उत्तरों में कहा है, समर्पण का अभिप्राय है, तन केवल सेवार्थ है, फरिश्तों के पास पैसा नहीं होता बल्कि वे तो व्हाइट-व्हाइट, लाइट-लाइट हैं, पवित्र हैं। 'बाबा मिला, सब कुछ मिला' अनुभव पढ़कर मन रोमांचित हो उठा। 'सहनशक्ति' लेख में बताया गया है, अहंकार को समाप्त करने पर ही व्यक्ति नम्र बन सकता है। नम्रता झुकने की ओर प्रेरित करती है, इससे जीवन में मधुरता आती है। आत्मा पवित्र बनती है। व्यक्ति का व्यक्तित्व सरल एवं सौम्य बनता है और इससे क्रोध पर भी नियंत्रण स्थापित किया जा सकता है। इन सभी तथ्यों से परमपिता परमात्मा शिवबाबा के अधिक निकट आने का अवसर मिलता है। जैसे-जैसे व्यक्ति से क्रोध रूपी आग परे होती जायेगी, वैसे-वैसे सहनशीलता, संतोष, नम्रता, मधुरता आती जायेगी।

– मंजू भण्डारी, भीलवाड़ा

मैं और मातेश्वरी

● ब्रह्माकुमार बृजमोहन, दिल्ली

मैं उन सौभाग्यशाली बच्चों में से हूँ जिन्होंने मातेश्वरी जी से साकार में अलौकिक स्नेह और पालना ली है। माँ के संपूर्णता दिवस की पुनीत स्मृति के इन दिनों में तो उनके लाड़-प्यार और ज्ञान-शिक्षाओं की सारी यादें विशेष तौर पर मन में ताजा हो उठती हैं और उनके साथ बिताई हुई घड़ियों के दृश्य हृदय के पट पर उभर कर एक फिल्म की तरह चलने लगते हैं। इस अवसर पर यही उचित होगा कि मैं उन स्मृतियों का आनन्द आपके साथ मिलकर उठाऊँ।

तपत बुझाने वाला सान्निध्य

मातेश्वरी जी से मेरी पहली मुलाकात सन् 1955 में हुई थी। तब मैं चार्टर्ड एकाउंटेंट की पढ़ाई पढ़ रहा था और इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के दिल्ली (कमला नगर) सेवाकेन्द्र पर ईश्वरीय ज्ञान-योग की शिक्षा प्राप्त करते मुझे कुछ महीने ही हुए थे। मैं अपने लौकिक माता, पिता और भाई के साथ पिताश्री और मातेश्वरी जी (जिन्हें हम स्नेह से बाबा और मम्मा कहकर पुकारते हैं) से मिलने आबू पर्वत पर स्थित मधुबन स्वर्गाश्रम में गया था। प्रथम मिलन के समय हॉल में सामने, एक संदली पर पिताश्री और दूसरी पर मातेश्वरी जी विराजमान थीं। मैंने दोनों की ओर बारी-बारी से देखा। मम्मा एक अलौकिक छवि में मुसकरा रही थी। उनके मुखमंडल से रूहानियत टपक रही थी। उनके नयनों से असीम स्नेह बरस रहा था। बच्चे पूरे कल्प (5000 वर्ष) के बाद जो जाकर मिले थे। मम्मा का व्यक्तित्व अति प्रभावशाली और सहज ही आकर्षण करने वाला था। मुझे अच्छी तरह याद है कि उन्होंने न तो कुछ कहा था और न ही कुछ बाह्य संकेत किया था। वह तो बस बैठी हुई मुसकराये जा रही थी। परन्तु उनकी इस मुसकान में ही कुछ ऐसा जादू था कि मुझे उनकी ओर से बुलाने की स्पष्ट महसूसता हुई। मैं स्वत: ही उठा और जाकर अलौकिक माँ के पास बैठ गया। ओफ, कितना तपत बुझाने वाला था उनका सानिध्य। उसी क्षण मैंने जान लिया कि भक्तजन माँ को शीतला कहकर क्यों पुकारते रहे हैं। माँ ने अपने पंख समान कोमल और कमल समान पवित्र हस्तों से मुझे प्यार की थपकी देते हुए मेरा मुख मीठा कराया था।

अजीब-सी उलझन

जितने दिन मैं आबू में रहा, मैंने एक अजीब-सी उलझन महसूस की, जिसका ज़िक्र मैंने आज तक किसी से भी नहीं किया है। आप सोचते होंगे कि ऐसी भी कौन-सी अनोखी उलझन हो

सकती है जिसको मैंने अब तक अपने पास ही रख छोड़ा है? वह बात दरअसल यह थी कि चाहे क्लास में, चैम्बर में (उन दिनों बाबा और मम्मा क्लास के तुरंत बाद बच्चों के साथ ज्ञान की चिट-चेट करने एक अन्य कमरे में आकर बैठा करते थे जिसको चैम्बर कहते थे। टोली भी वहीं पर मिला करती थी) या जहाँ कहीं भी बाबा और मम्मा दोनों विराजमान होते, तो मैं इस दुविधा में पड़ जाता कि दोनों में से किससे दृष्टि लूँ और किसकी दृष्टि से वंचित रहूँ? एक ओर ज्ञान सूर्य का तेज और प्रकाश होता तो दूसरी ओर ज्ञान चंद्रमा की चांदनी और शीतलता होती। मैं दोनों को ही इकट्ठा प्राप्त करते रहना चाहता था। खैर, बाद में तो मैंने उसका सही हल निकाल लिया और दोनों से बारी-बारी से दृष्टि लेता रहता।

लौकिक का अलौकिक में परिवर्तन

यूँ तो मम्मा एक युवा अवस्था की

कन्या ही थी परंतु यज्ञ-माता का कार्यभार संभालते ही उनकी शारीरिक आकृति में भी इतनी आश्चर्यजनक तबदीली आ गई थी कि वृद्ध से भी वृद्ध व्यक्ति को उनसे स्वाभाविक तौर पर माता की भासना ही आती थी। वैसे तो मैंने उसी दिन अपने लौकिक पिता तथा अन्य बड़ी आयु वाले बच्चों को उनसे 'मम्मा मम्मा' कहकर मिलते देखा ही था परंतु इसका एक और अनोखा अनुभव होना अभी बाकी था। गुरुवार के दिन मधुबन आश्रम से ध्यानावस्था में जाकर शिवबाबा के पास भोग ले जाने वाली संदेशी शारीरिक नाते से मम्मा की लौकिक माता थीं जिनका नाम रोंचा था। उस लौकिक माता को अपनी ही लौकिक बच्ची को अपनी अलौकिक माँ मानना और मम्मा का उनके साथ अलौकिक बच्ची जैसा व्यवहार - ईश्वरीय ज्ञान-योग बल द्वारा बदले हुए संबंध से व्यवहार करना तो बस देखते ही बनता था। पहली बार जब मैंने इस दृश्य को देखा तो मेरे रोमांच खड़े हो गये थे। मम्मा के सामने उनकी लौकिक माता वृद्धा होने के बावजूद भी सचमुच उनकी बच्ची के समान ही लग रही थी। किस प्रकार संस्कार, स्वभाव और कर्त्तव्य के बदल जाने से मनुष्यात्मा का सारा वातावरण तथा उसके सारे संबंध ही बदल जाते हैं, इस सत्यता की छाप मुझ पर उसी घड़ी लग गई थी। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मेरा भी सारा ही लौकिक परिवार ज्ञान मार्ग में चल पड़ा था परंतु उस क्षण के अनुभव से लौकिक नातों को अलौकिक में परिवर्तित करने में मुझे बड़ी मदद मिली थी।

हर कर्म से चहकती हुई दिव्यता

मम्मा का जीवन इस बात का आदर्श उदाहरण था कि ईश्वरीय ज्ञान-योग की शक्ति से मनुष्य में कितना पलटा आ जाता है और दिव्य गुणों की धारणा करने से सहज ही उसका जीवन कितना श्रेष्ठ और हीरे-तुल्य बन जाता है। भविष्य के 21 जन्मों अर्थात् सतयुग-त्रेता की पावन, श्रेष्ठाचारी नई दैवी सृष्टि में 2500 वर्षों के लिए जीवनमुक्त देवी-देवता पद की प्राप्ति की बात किसी नये जिज्ञासु की समझ में अभी न भी बैठी हो पर प्रत्यक्ष को क्या प्रमाण? मम्मा के बोलचाल और हर कर्म से चहकती हुई दिव्यता को देखकर उनके संपर्क में आने वाला हर व्यक्ति यह सोचने पर मजबूर हो जाता था कि जिस ज्ञान से ऐसा मम्मा जैसा ऊँचा जीवन बनता हो, वह अवश्य ही ईश्वर द्वारा प्रदत्त होगा। उसके तर्क-बहस समाप्त हो जाते और वह ज्ञान द्वारा अपने वर्तमान जीवन को मम्मा जैसा दिव्य बनाने की सोचने लगता। इस तरह मम्मा का प्रभावशाली व्यक्तित्व अनेक आत्माओं को इस ईश्वरीय ज्ञान मार्ग की ओर आकर्षित करने के निमित्त बना। इस मार्ग पर चलने वाली अनेकानेक आत्माओं को भी अपने पुरुषार्थ को तीव्र करके मम्मा जैसा सर्वगुणमूर्त बनने की प्रेरणा हर बार उनसे मिलने पर प्राप्त होती थी। पिताश्री के लिए तो फिर भी कोई सोच सकता था कि शिवबाबा का साकार रथ होने के कारण शायद उन्हें कोई असाधारण ईश्वरीय शक्ति प्राप्त होगी (हालांकि ऐसी कोई बात थी नहीं) परंतु मम्मा के जीवन को तो निःसंकोच और स्पष्ट शब्दों में ईश्वरीय ज्ञान-योग की चमत्कारी शक्ति का एक अद्वितीय नमूना कहा जा सकता है।

आस-पास सन्नाटा छाया रहता

मम्मा दिव्यगुणों से संपूर्ण साक्षात् देवी थी। उनके संकल्प चट्टान की तरह मज़बूत, बोल मीठे, सारयुक्त और कर्म श्रेष्ठ तथा युक्तियुक्त थे। मम्मा के दृढ़ संकल्प एवं सहज शक्ति की एक मिसाल मुझे ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहन ने सुनाई थी जो कुछ समय तक मम्मा की ब्राह्मणी रही थी। एक बार मम्मा को बहुत सख्त शारीरिक व्याधि थी पर क्लास का समय हो रहा था। मम्मा अपनी व्याधि की परवाह न करते हुए क्लास में गई और उन्होंने नित्य प्रति की तरह ज्ञान-मुरली सुनाई। मोहिनी बहन यह

देखकर चकित रह गई कि मम्मा के चेहरे पर उस व्याधि की पीड़ा की रेखा तक दिखाई न देती थी और क्लास को उनकी उस व्याधि के बारे में पता तक नहीं पड़ा था। इतनी गज़ब की सहनशक्ति मम्मा में थी। मम्मा इतनी योगयुक्त, गंभीर और शांत रहती थी कि उनके आस-पास के वातावरण में सन्नाटा छाया रहता था जो सभी को प्रत्यक्ष महसूस होता था। ऐसा लगता था कि मानो वे कोई चलता-फिरता लाइट हाऊस और माइट हाऊस हों। मम्मा की चाल फरिश्तों जैसी थी। आश्रमवासियों को पता भी नहीं चलता था कि कब मम्मा उनके पास से गुज़र गई अथवा कब से वे उनके पीछे खड़ी हुई उनकी एक्टिविटी को जाँच रही थीं। मम्मा के बोल बहुत ही मधुर, स्नेहयुक्त और सम्मानपूर्ण होते थे। मम्मा ने मुझे सदा 'बृजमोहन जी' कहकर ही बुलाया। पत्र में वे मुझे सदा 'लाडले बृजमोहन जी' लिखती। पत्र में या व्यक्तिगत मिलने पर वे सबसे पहले शारीरिक तबीयत का हाल-चाल अवश्य पूछतीं। उस अलौकिक माता का बच्चों से जितना असीम प्यार था उतना किसी लौकिक माता का क्या होगा! मुझे तो ऐसे लगने लगा था कि जैसे कि मेरी लौकिक माँ भी मम्मा ही हो।

जैसे आप मानें वैसे और मानेंगे

मम्मा शिव बाबा के ज्ञान को तुरंत धारणा में ले आती थीं और विचार सागर मंथन करके अपने अनुभव के आधार पर उस ईश्वरीय ज्ञान को बहुत सहज बनाकर बच्चों को सुनाती थी। मम्मा ज्ञान के एक गुह्य रहस्य का इतना विस्तृत स्पष्टीकरण करतीं कि कोई अहिल्या जैसी पत्थरबुद्धि (मोटी बुद्धि) वाली आत्मा भी उसे झट समझ जाए। शुरू-शुरू की बात है, एक दिन मैंने मम्मा से प्रश्न पूछा कि मम्मा, हमारे ज्ञान की तो सभी बातें नई-नई हैं, लोग ये सब कैसे मानेंगे? मम्मा ने प्रश्न के रूप में ही उत्तर दिया कि आप कैसे माने हो? जैसे आपने समझा और माना है, वैसे ही अन्य लोग भी मान लेंगे।

प्रेम के साथ नेम भी

हम बच्चे जब भी मम्मा से प्रेम में नेम (नियम) नहीं की युक्ति के अनुसार कोई ऐसा कार्य करने को कहते जिससे हमारा अलबेलापन दिखाई देता हो तो वे हमें बहुत ही मीठे ढंग से कर्मों की गुह्य गति के बारे में सावधान कर देतीं। एक बार जब मम्मा अंबाला छावनी के सेवाकेन्द्र पर पधारी थी तो मैं नंगल (जहाँ पर मैं सर्विस करता था) से उन्हें मिलने के लिए गया और वहीं उनसे नंगल चलने का अनुरोध करने लगा। मम्मा कह रही थी कि कुछ दिनों बाद का प्रोग्राम बनाओ परंतु मम्मा के भावार्थ को न समझने के कारण मैंने उनसे दुबारा अनुरोध किया कि मम्मा, आप कल ही चलो न। तो फिर मम्मा ने कहा कि मैं तो चल सकती हूँ परंतु जो अन्य आत्मायें पंजाब के भिन्न-भिन्न केन्द्रों से मुझे अंबाला में मिलने आयेंगी और निराश होंगी, उनका बोझ तुम पर पड़ेगा। तब मैंने समझा कि वे कुछ दिनों बाद नंगल चलने को इसलिए कह रही थी कि सबको उनके प्रोग्राम की सूचना मिल सके। फिर तो मैंने उनकी बात मान ली और वे थोड़े दिनों के लिए नंगल पधारी थीं। इससे स्पष्ट होता है कि मम्मा लवफुल और लॉफुल की दोनों योग्यताओं का इकट्ठा प्रयोग किस कुशलता से करती थी। वे प्रेम के लिए नेम या नेम के लिए प्रेम की तिलांजलि नहीं देती थीं।

पिता स्नेही

साकार मम्मा ने तो रुद्र-ज्ञान-यज्ञ का कारोबार संभालने में पिताश्री का साथ अंत तक दिया ही, पर मम्मा के संपूर्ण होने के बाद जब अव्यक्त मम्मा की पधरामणि संदेशी के तन में हुई तो आप जानते हैं कि उन्होंने पहले-पहले क्या कहा? मम्मा ने उस समय उपस्थित बच्चों से यही कहा कि अब आप बच्चों को यज्ञ का कार्य-भार संभालने में पिताश्री का पूरा हाथ बँटाना है। पिताश्री वृद्ध हैं, उन पर मम्मा के जाने से अधिक बोझ न पड़े। कितनी पिता स्नेही थी हमारी मम्मा!

वह घटना कभी भूल नहीं सकता

उस घटना को तो मैं कभी भूल ही

नहीं सकता जो मम्मा के संपूर्ण होने से थोड़े ही समय पूर्व मेरे आबू जाने पर घटी थी। एक दिन मैं प्रात: क्लास के बाद नक्की झील का चक्कर लगाने निकल गया। सारा चक्कर लगाकर (जिसमें कुछ हिस्सा मैंने दौड़ भी लगाई थी) लौटते हुए जब मैं आश्रम के समीप पहुँचा ही था कि क्या देखता हूँ कि मम्मा अपनी ब्राह्मणी जमुना बहन के साथ पांडव भवन से निकल झील की ओर जा रही है। मम्मा को देखते ही मेरी तो खुशी का ठिकाना न रहा। जमुना बहन के बताने पर कि मम्मा थोड़ा पैदल जा रही है, मैं पलट कर उनके साथ पुन: घूमने चल पड़ा। चलते-चलते हम उस जगह पहुँच गये जहाँ से अनादरा प्वाइंट को रास्ता जाता है। सहसा मम्मा ने कहा, चलो आज अनादरा प्वाइंट तक चलते हैं। मैं तो बहुत ही खुश हो गया और मम्मा के साथ तरह-तरह की बातें करके फूला नहीं समा रहा था। मैंने कहा, मम्मा अब तो आप जानती हो कि मैं बृजमोहन हूँ और मैं जानता हूँ कि आप मम्मा हैं पर सतयुग में तो ये सब याद नहीं रहेगा। मम्मा रहस्यपूर्ण रीति से मुसकराती रहीं। मम्मा से वह मिलना-बहलना इतना सुखद प्रतीत हो रहा था कि सारे रास्ते खुशी से मेरे रोमांच खड़े रहे और मुझे बिल्कुल पता ही नहीं लगा कि मैं दुबारा इतना चल लिया हूँ। जमुना बहन ने बताया कि मम्मा भी रोज़ इतनी दूर नहीं आती है। अगले दिन मम्मा और बाबा ने मेरे साथ फोटो निकलवाये जो आज भी मेरे कमरे में लगे हुए हैं। पर तब मुझे स्वप्न में भी यह विचार नहीं था कि कुछ ही दिनों बाद माँ हमसे विदाई लेने वाली थी और इस कल्प की हमारी यह अंतिम मुलाकात थी। पर लगता है कि मम्मा को यह सब ज्ञात था और शायद इसलिए उस दिन मुझ पर इतना प्यार लुटाया जा रहा था। ❖

स्मृति के क्षण

ब्रह्माकुमार देवीचन्द कौशिक
उत्तमनगर, नई दिल्ली

हे मातेश्वरी, याद आपकी, स्व-स्मृति जाग्रत करती है।
सद्बुद्धि, सन्मति प्रदायक, पुरुषार्थ में गति भरती है।।

ममता-वात्सल्य-स्नेह की, सत्य सार्थक चेतन मूरत।
जिसने जाना उसने पाया, सचमुच तुम सबकी माँ मूरत।।

तृप्त नयन, विशाल चितवन,अधरों पर अमृत का सागर।
बाँहों में भू-मगन समाये, उर लहराता करुणा सागर।।

धर्म, धारणा, सहन, साधना ज्ञान-योग की मूरत प्यारी।
नयनों में रूहानी चुम्बक, दिव्य गुणों की चेतन क्यारी।।

न्यारा भाषण, मधुर भासना, लक्षण लक्ष्य एक बनाये।
प्रभु पंथ में सभी असम्भव, तुमने सम्भव कर दिखलाये।।

ब्राह्मी, आद्या, ब्रह्मचारिणी, कामधेनु बन आश पुराती।
हंसवाहिनी सरस्वती बन, जन-मन का अंधकार मिटाती।।

निमित्त और निर्मानचित्त रह, कर्त्तापन से बिल्कुल न्यारी।
कर्मों में दिखती साकारी, स्थिति से दिखती आकारी।।

विधि की निधि बन, निशदिन तुमने अंग-संग में प्रभु बसाया।
वन्देमातरम् कह ब्रह्मा ने, निज मुख से तेरा गुण गाया।।

स्व में स्थित, शिव को अर्पित, जन आदर्श,जगत कल्याणी।
कर्त्तव्य वक्तृत्व एक तुम्हारे, सबको सदा सहज वरदानी।।

स्व स्थिति से परिस्थिति पर, विजय ध्वजा फहराने वाली।
निश्चय का ध्रुव तारा बनकर, कल्प-कथा दोहराने वाली।।

पुरुषार्थ की पावन प्रतिमा, जन्म कुमारी, जग महतारी।
तुम खुद ही के समान थी, किससे उपमा करें तुम्हारी।।

स्मृति के क्षण, ब्राह्मण जन-मन, करते उर से आज नमन हैं।
मातृत्व की वह श्रेष्ठ कहानी, आज कह रहे नयन-नयन हैं।।

विश्व पर्यावरण दिवस पर विशेष...

बीज का बड़प्पन

● **ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन**

एक नन्हे से बीज के मन में संकल्प उत्पन्न हुआ कि मैं अपने भीतर छिपी खुशबू से जगत को सुवासित करूँ। संकल्प को साकार करना इतना आसान न था। इसके लिए उसे अपने अस्तित्व को क्षत-विक्षत करना था और धरती की अंधेरी, घुटन भरी परत के नीचे दबना था पर बीज ने हिम्मत न हारी, वह मुख नीचा कर धरती के अंदर उतर गया।

करवट बदल ऊपर उठा

धरती ने कहा, मेरे भार तले दबकर तू अपने अस्तित्व को बचा पाए, यही बहुत बड़ी बात है, इससे ज्यादा कुछ न कर पाएगा। पुष्प उस अंधकार में भी मुसकराता रहा। जल के अज्ञात कणों ने उसके होंठों को जरा-सा गीला किया और करवट बदल वह ऊपर उठ गया। उन्हीं गीले होंठों से उसकी आंतरिक शक्तियाँ बाहर फूट पड़ी। उसके प्रबल उत्साह को देख धरती के कणों ने दो हिस्सों में बँटकर उसके बाहर निकलने का मार्ग निर्मित कर दिया।

अस्तित्व पर प्रहार

बीज ने रोशनी में ज्योंही नेत्र खोले, मन आनन्दित हो उठा। पर यह क्या, धरती के भीतर तो केवल घुटन ही थी, बाहर के जगत में तो अस्तित्व पर कई प्रहार होने लगे। हवा ने चेतावनी दी, मेरा एक ही झोंका बहुत है तेरे पैर उखाड़ने के लिए, संभल, मेरे सामने बड़े-बड़े पेड़, चट्टान सब बेबस हो जाते हैं, तुम्हारी तो ताकत ही क्या है! नन्हा बीज अपने पाँवों को मजबूती से रोपे कभी दायें झुका, कभी बाएँ और हर झोंके को बाँहों में झुलाने वाला झूला समझ इठलाता रहा। उसके साहस को देख वायु अचंभित हुए बिना न रह सकी।

दर्द को पी गया

उसके रसीले कोमल तने को कइयों ने ललचाई नज़र से देखा और चोंच का कठोर प्रहार भी किया लेकिन निरंतर विकास की लगन से वह इस असहनीय दर्द को भी पी गया मानो मौन स्वर में कह रहा हो, मुझे विकसित होने दो फिर तो मेरा जो भी है, तुम्हारा ही है।

मुग्ध हो उठा माली

विजातीय विरोधों की बात छोड़िये, कुछ सजातीय भी उससे प्रतिस्पर्धा करने लगे। रस, गंधहीन झाड़-झंखाड़ ने उसकी प्रगति को

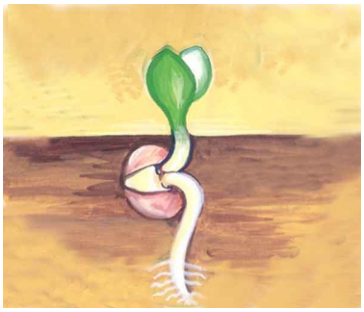

रोकने की भरपूर कोशिश की। किसी ने अपनी जड़ें फैलाकर उसके हिस्से का पानी चुराया, किसी ने तने के फैलाव को, अपने फैलाव से रोकने की कोशिश की। कई तो उसकी ऊँचाई से ऊँचे होकर उसके अस्तित्व को ही ढकने लगे थे। पुष्प-पौधा अपने को सिकोड़ता था पर घायल नहीं होता था। उसके अदम्य साहस को देख बाग का माली मुग्ध हो उठा और विघ्न डालने वाले झाड़-झंखाड़ को समूल उखाड़ फेंका। सत्य ही है, भगवान, दुनिया के बगीचे का माली भी उन्हीं की सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते हैं। विघ्नों के बीच रहकर भी अडोल रहने वाले के विघ्न वह जड़ से उखाड़ फेंकता है। माली का सहयोग पाकर पौधा प्रफुल्लित हुआ। उसकी विकास-गति द्रुत हो गई।

कुपित हुआ सूर्य

जीवन-दान देने वाला सूर्य भी परीक्षा लेने में पीछे न रहा, कुपित हो बोला, इतनी तेजी से बढ़कर मेरी ऊँचाई छूना चाहता है, मेरे ताप के आगे तू कहाँ ठहर पाएगा। लेकिन, अपने भीतर की शीतलता के बल से बिना किसी छाया के, पौधा सूर्य के ताप को भी पी गया।

तपस्या सफल हुई

इस विघ्नों, बाधाओं से जूझते भी पौधा मुसकराता रहा, हवा से अठखेलियाँ करता रहा और फूट पड़ी उस पर एक नहीं, कई कलियाँ जो रंग और गंध का अपने भीतर अनुपम संसार संजोए हुए थी। पौधे की तपस्या सफल हुई। संसार को खुशबू से महकाने का संकल्प सार्थक हुआ।

जो बीज की तरह अपने को गलाना जानता है, जो विघ्नों और बाधाओं के बीच भी अचल-अडोल रहता है, जो निन्दकों और दुश्चिंतकों के समक्ष भी उत्तेजित और विचलित नहीं होता, मेहनत और पुरुषार्थ से जो पीछे नहीं हटता, उसी के भीतर की शक्तियाँ, प्रकाश बनकर संसार में फैलती हैं, वह देवत्व को प्राप्त होता है। जन-जन के मन को ज्ञान की खुशबू से सुवासित कर विधाता के मुकुट की मणि बन मुसकराता है। ❖

बाबा ने बनाया शिव शक्ति

ब्रह्माकुमारी आजाद, शान्तिवन, बी.के.कालोनी

अमृतवेले तीन बजे मेरी आँखें अपने आप ही खुल जाती हैं मानो बाबा स्वयं उठाने आते हों। घटना मार्च 2004 की है। अमृतवेले आँखें खुली तो बाहर गली में कुत्तों के भोंकने की आवाज आई। मैं घर का गेट खोलकर गली में आ गई। मैंने देखा, करीब दस आदमी मेरी तरफ बढ़े आ रहे थे। उनके हाथों में लठ्ठ दिखाई दे रहे थे। शायद वे चोरी के इरादे से कॉलोनी में घूम रहे थे। तभी तो कॉलोनी के कुत्ते उन्हें देखकर भोंक रहे थे। एक बार तो भय का संकल्प आया इसलिए मैं घर के सामने खाली पड़ी शिखर अपार्टमेंट की बिल्डिंग की तरफ दौड़ी। पैर के नीचे उबड़-खाबड़ जमीन होने से मैं गिर गई। इतने में एक चोर मेरे ऊपर आकर बैठ गया। तभी मुझे बाबा की याद का संकल्प आया कि तुम तो शिव शक्ति हो और अन्दर शक्तियों का संचार हो गया।

मैंने चोर को एक झटके में नीचे गिराया और उसे दो-चार चमाट लगा दिये। उसको पिटता देख दूसरा चोर मेरे पास आया और चाकू की नोक मेरे गले पर लगाते हुए बोला, चुप रह, चुप रह। लेकिन मैंने दुर्गा का रूप धारण कर चाकू की धार को अपने बाएं हाथ से पकड़कर, दाएं हाथ से उसका मुंह नोंच दिया और तीन-चार चांटे जम कर लगा दिये। चाकू से मेरे हाथ में थोड़ा जख्म हो गया था।

इस दौरान चोरों के कुछ साथी हमारे घर में घुस कर छानबीन कर रहे थे। शिखर अपार्टमेंट में सो रहे एक लेबर को जाग आ गई और वह चोर-चोर चिल्लाता हुआ कॉलोनी में दौड़ पड़ा जिससे सभी कॉलोनी निवासी जाग गये। चोर जान बचाकर भाग गये। मैं पत्थर मारते हुए काफी दूर तक उनको खदेड़कर आई। उनके हाथ कुछ भी नहीं आया। सुबह जब पुलिस को यह जानकारी दी तो वे भी इस बहादुरी की प्रशंसा करने लगे लेकिन मैं यह सब श्रेय मीठे बाबा को देती हूँ जिसने मुझे शिव शक्ति बनाया। ❖

अलौकिक पालना की अनमोल यादें

● ब्रह्माकुमार शिव कुमार, दिल्ली

एक कहावत है, संसार में सब कुछ मिल सकता है किंतु माँ नहीं मिल सकती। माँ की पालना एवं माँ की लोरी का अपना एक अनोखा ही महत्व होता है। मातेश्वरी जी को मैंने बहुत निकट से देखा तथा उनके साथ मधुबन में रहने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली था। उनमें गंभीरता, मधुरता, हर्षितमुखता इत्यादि अनगिनत गुण थे तथा उनसे सर्व को माँ की भासना आती थी। बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक सभी उन्हें मम्मा कहा करते थे। मधुबन में जो भी पार्टियाँ आती थी, उनके ठहरने, भोजन आदि की व्यवस्था स्वयं मातेश्वरी जी किया करती थीं। उनकी पालना पाकर किसी को मधुबन से वापस जाने का मन नहीं करता था।

धन्य-धन्य हो गया

जब मैं पहली बार मम्मा से मिला, उन्होंने मुझे अपनी गोदी में बिठाया, अलौकिक स्नेह दिया, अपने हस्त-कमलों से मुख में गुलाब जामुन खिलाया। अलौकिक माँ का वात्सल्य पाकर मैं धन्य-धन्य हो गया। मैंने मन में कहा कि ऐसी माँ को छोड़कर कभी भी, कहीं भी नहीं जाऊँगा। सेवायें भी मुझे पिताश्री और मातेश्वरी जी के कमरे की मिली हुई थी। इस परम सौभाग्य ने मुझे दुनिया के आकर्षण से दूर करके एक बाबा की गोद में रखा।

सदैव 'हाँ जी' कहो

कभी कोई बच्चा किसी सेवा के लिए असंभव व मुश्किल कहकर कारण सुनाता तो मातेश्वरी जी उसे कहती थी, कारण बताना माना स्वयं को कारागार में बंद करना। यदि कोई व्यक्ति लेकिन यह तो ऐसा है..कह करके बहाना बनाता तो मातेश्वरी जी उसे लेकिन का अर्थ समझाती। सिंधी भाषा में 'किन' माना गंदगी। लेकिन अर्थात् गंदी वस्तु को लेना। जो गंदगी को लेकर आया है वो कैसे आगे बढ़ेगा। मम्मा कहती थी 'न' शब्द तो बाबा की डिक्शनरी (शब्दकोष) में नहीं है। सदैव 'हाँ जी' कहा करो।

एक-एक दाना एक-एक मोहर बराबर

मीठी मम्मा के शब्दों में, सच्चा पुरुषार्थी वही है जो पुरुष अर्थात् आत्मा के सही अर्थ में टिके अथवा आत्मिक स्थिति में स्थित होकर कर्म करे। जो भूल एक बार हो जाये, वह दुबारा न हो। यज्ञ की कोई वस्तु बर्बाद व खराब अथवा बेकार नहीं जानी चाहिए। एक बार की बात है, यज्ञ-वत्स गेहूँ साफ करके बोरे में भर चुके थे, कुछ गेहूँ इधर-उधर बिखरे हुए

भी थे। मातेश्वरी जी ने ध्यान दिलाते हुए बड़े ही स्नेह से कहा कि एक-एक गेहूँ का दाना एक-एक मोहर के बराबर है। इस प्रकार मातेश्वरी जी यज्ञ की छोटी से छोटी वस्तु की कीमत रखना सिखाती थी।

तपस्या का प्रत्यक्ष प्रमाण

मातेश्वरी जी की स्थिति अचल-अडोल रहती थी। मेरी छोटी आयु होने के कारण सेवा में कुछ न कुछ ऊपर-नीचे होना भी स्वाभाविक था किन्तु मम्मा कभी डाँटे या नाराज़ हो, ऐसा कभी नहीं रहा। मम्मा का कभी नाराज़गी वाला चेहरा नहीं देखा। यज्ञ में अनेक प्रकार की परिस्थितियाँ भी आईं किंतु मम्मा के हर कर्म में शिव बाबा और ड्रामा पर निश्चय, निश्चिंतता, धैर्य तथा अटल विश्वास छलकता था। मातेश्वरी जी स्वयं के शरीर की व्याधि के समय भी चेहरे पर गंभीरता व मुसकराहट का समन्वय रखती थी। यह भी मम्मा की तपस्या

का प्रत्यक्ष प्रमाण देखा। एक बार मातेश्वरी जी की तबीयत ठीक नहीं थी। डॉक्टर को बुलाया गया। मातेश्वरी जी के पास तीन-चार बहनें बैठी थी, उन्हें देखकर डॉक्टर ने पूछा, पेशेन्ट कौन है? जब बतलाया गया तो डॉक्टर ने कहा, ये तो मेरे से भी ज्यादा तंदुरुस्त हैं।

मातेश्वरी जी कहा करती थी, सदैव अटेन्शन रखना है कि मैं आत्मा हूँ। शरीर के द्वारा कार्य करने वाली शक्ति आत्मा है। हम आत्मा हैं, यह अभ्यास करना है। **यदि हम किसी के प्रति घृणा आदि रखते हैं तो हमारा विकर्म बनता है।** हमें हर वक्त अटेन्शन रखना है कि कोई भी अपवित्रता का काम नहीं करना है। दो प्रकार के कर्मों का हिसाब चलता है। एक तो हम किया हुआ पा रहे हैं, दूसरा, फिर बनाते भी जाते हैं, जो आगे पाना है। इसलिए एक कर्म का नतीजा आ रहा है, दूसरा नतीजा बना रहे हैं। तो हमको दोनों तरफ को संभालना है। ❖

शिवबाबा की याद से पुरानी तकलीफ मिटी

सोना चौरसिया, कमालगंज

कई सालों से मेरे नाक से पानी बहता रहता था। इस कारण मेरे माता-पिता बहुत परेशान रहते थे। मेरा इलाज कानपुर, फर्रुखाबाद, कन्नौज, मथुरा, झांसी, बाँदा, कमालगंज आदि स्थानों पर करवा चुके थे लेकिन कोई फायदा नहीं मिला। एक दिन माताजी को स्थानीय ब्रह्माकुमारी बहन मिली। माताजी ने अपनी कई परेशानियाँ उन्हें बताई और रोने लगी। बहनजी ने माताजी को सेवाकेन्द्र पर ज्ञान सीखने का निमंत्रण दिया और आश्वासन दिया कि शिवबाबा की कृपा से सब परेशानियाँ मिट जायेंगी। मैं और माताजी रोज सुबह और शाम क्लास में जाने लगे। वहाँ हमें बहुत ज्यादा शान्ति मिली। हमें सात दिन का कोर्स कराया गया। हम सुबह उठकर शिवबाबा से योग लगाने लगे। हमारी परेशानियाँ कम होती गई। माताजी आस-पास के लोगों को भी आश्रम ले जाने लगी। सभी को वहाँ बहुत ही शान्ति मिली।

एक दिन की बात है। मैंने योग में शिवबाबा से कहा कि बाबा, मेरे घर वाले मेरे नाक की तकलीफ से बहुत परेशान हैं। बाबा, आप ही इसको ठीक कर दो ना! उसी रात बाबा सपने में डॉक्टर के रूप में सफेद कपड़े पहने हुए दिखाई दिये और मुझे कहा, बेटी, तुम चिन्ता मत करो, तुम बिल्कुल ठीक हो और मेरे सिर पर हाथ फिरा दिया। फिर अदृश्य हो गये। सुबह जब आँख खुली तो मैंने देखा कि नाक की कोई तकलीफ नहीं थी। वर्षों पुरानी तकलीफ शिव बाबा की मदद से बिल्कुल ही ठीक हो गई है। मैं और मेरे परिवार के सभी सदस्य शिवबाबा को बार-बार धन्यवाद देते हैं। हम सभी लोग बहुत ही खुश हैं। जैसे शिवबाबा ने मेरी तकलीफ मिटाई, ऐसे बाबा सभी की शुभकामनायें पूर्ण करें। ❖

तेरे प्यार में हम

तेरे प्यार में हम समाते जा रहे हैं
मिली जो खुशी उसमें
सबको डुबोते जा रहे हैं
हम तो थे पत्थर,
तूने बनाया हीरा।
इसकी चमक से हम,
निखरते जा रहे हैं।
सोचा न था कभी,
तेरी गोद पा लेंगे।
इस गोद में तो हम,
समाते ही जा रहे हैं।
तेरे प्यार में हम.....
टूटना, बिखरना यही
खेल था हमारा।
तेरे स्नेह की मलहम से,
जुड़ते ही जा रहे हैं।
जीवन बना था बोझ,
ढो रहे थे इसको।
तेरी श्रीमत से हम,
उड़ते जा रहे हैं।
अकड़े, जकड़े हुए थे,
विकारों में हम।
पढ़ाई से तेरी,
मुक्ति को पा रहे हैं।
तेरे प्यार में हम.....

ब्र.कु.सुभाष, खानपुर (दिल्ली)

झूठी प्रशंसा – दुर्गुण का द्वार

● ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

कड़ी मेहनत व सच्ची लगन से जब व्यक्ति सफलता की मंज़िल हासिल कर लेता है तो यह बात प्रशंसनीय है लेकिन इससे भी अत्यधिक प्रशंसा की बात तब है जब वह उस मंज़िल पर बना रहता है क्योंकि ऐसे भी व्यक्ति इस संसार में हैं जो जितना जल्दी मंज़िल हासिल करते हैं, उतना ही जल्दी उस मंज़िल से फिसल भी जाते हैं। मंज़िल पर बने रहने के लिए दो बातों का ध्यान अवश्य रखना है। पहली, स्वयं की स्थिति पर ध्यान रखें, ना कि दूसरों की स्थिति पर। दूसरी, स्वयं में आये परिवर्तन का अहंकार न करें।

झूठी प्रशंसा खतरा है

यदि किसी में कोई अच्छा गुण है और उस गुण की प्रशंसा की जा रही है तो वह प्रभावित नहीं होगा। लेकिन जो गुण उसमें है ही नहीं, फिर भी कोई उसकी प्रशंसा करता है तो वह झूठी प्रशंसा है। ऐसी प्रशंसा पर खुशी महसूस करके अहंकार आने में देर नहीं लगेगी। यही झूठी प्रशंसा जीवन को खतरे में डाल देती है। होना तो यह चाहिए कि प्रशंसक के बजाय हम निन्दक का अहसान मानें क्योंकि अपने अवगुण स्वयं नज़र नहीं आते या नज़रअंदाज़ कर दिये जाते हैं। कोई निन्दक यदि कमियों का बखान करे तो क्रोध करने की बजाय उसकी बात पर ध्यान देते हुए दुर्गुण निकालने की कोशिश करें।

झूठी प्रशंसा भ्रमित करती है

कई बार, प्रशंसा करने वाला इतना भ्रमित कर देता है कि उस पर विश्वास करने वाला अपने जीवन से भटक जाता है क्योंकि चापलूस व्यक्ति अपना उल्लू सीधा करने के लिए मीठी-मीठी बातों में उलझा कर कहता है कि आप तो बहुत योग्य हो, बहुत समझदार व अच्छे हो, आप जैसा कोई नहीं है आदि-आदि। इससे बचने का उपाय यह है कि जब आपकी प्रशंसा हो रही हो तो तुरंत अपनी निर्णयशक्ति को जगाएँ और विचार करें कि जो मेरे बारे में कहा जा रहा है, क्या वह ठीक है? कहीं कोई दुर्गुण इस प्रशंसा के साथ अंदर तो नहीं उतर रहे हैं?

आलोचना रूपी खाद से विकसित होता है जीवन

मनुष्य के जीवन में जिस तरह दुख-सुख, लाभ-हानि, जय-पराजय, दिन-रात, सुबह-शाम साथ चलते हैं, ऐसे ही हमारे निन्दक व प्रशंसा करने वाले भी संग-संग रहते हैं। आलोचना एक ऐसी बदबूदार खाद है जो मानव की जड़ों में जाकर अपना प्रभाव दिखाती है। जैसे सेन्ट डालेंगे तो पौधा पनप ही नहीं सकता। इसी प्रकार मनुष्य को भी प्रशंसा सुनने में अच्छी लगती है परंतु इससे उसका विकास अवरुद्ध हो जाता है। निन्दा रूपी खाद की बदबू सहन करने पर ही जीवन में सद्गुणों का विकास होता है जिससे जीवन फूल की तरह खिलकर खुशबू फैलाता है।

किसी नगर में एक उदार राजा शासन करता था तथा दिन-रात प्रजा के लोकोपकारी कार्यों में लगा रहता था। राज्य में एक दरिद्र व्यक्ति ऐसा भी था जो दिन-रात राजा की आलोचना करता था। इस बात की खबर राजा को लग चुकी थी। एक दिन उन्होंने एक योजना बनाई और एक सेवक को उस दरिद्र व्यक्ति के घर भेजा।

सेवक ने उससे कहा, राजा ने आपके लिए एक आटे की बोरी, एक साबुन की थैली और एक खांड की पुड़िया उपहार स्वरूप भेजी है। वह व्यक्ति गर्व से फूल उठा। उसने आस-पास के लोगों को तथा एक मंदिर के संत को भी बुला लिया तथा कहा, देखो, स्वयं राजा भी मेरी सद्भावनायें पाने के लिए कितने इच्छुक हैं, तभी तो मेरा आदर करते हुए ये उपहार मेरे लिए भेजे हैं।

(शेष..पृष्ठ 26 पर)

बनो फ़रिश्ते ब्रह्मा जैसे

● ब्रह्माकुमार सूर्य, माउंट आबू

अनेक धर्मों की आत्माएँ फ़रिश्तों के आने का इन्तज़ार कर रही हैं। उन्हें आभास हो रहा है कि फरिश्ते आयेंगे और हमें दु:खों से मुक्त करेंगे, सत्य राह दिखायेंगे, मुक्ति की राह दिखायेंगे, हमें बहिश्त में ले जायेंगे। हम यह भी जानते हैं कि कुछ धर्मों के कट्टर लोग प्रभु सन्देश भी हमसे नहीं सुनेंगे लेकिन फ़रिश्तों की बातें वे सभी मानेंगे। उन्हें मुक्ति का वर्सा भी तब मिलेगा, जब वे भगवान को अपना परमपिता मानकर दिल से कहेंगे 'मेरा बाबा।' इसलिए बाबा हमें फरिश्ता बनने के लिए बार-बार उमंग दिला रहे हैं।

सर्वप्रथम प्रजापिता ब्रह्मा बाबा अपनी तपस्या और पवित्रता के बल से व यज्ञ-सेवा में हड्डियाँ देकर फ़रिश्ता बने। जिन्होंने उन्हें विवेकपूर्ण दृष्टि से देखा वे जानते हैं कि उनकी काया भी अति निर्मल हो गई थी, कइयों को वे धरा से ऊपर दिखाई देते थे, उनसे प्रकाश फैलता नज़र आता था। उनका चित्त पूर्णत: शान्त व निर्विकारी हो गया था। वे बहुत अन्तर्मुखी बन सभी को श्रेष्ठ वायब्रेशन्स देते रहते थे। उनकी दृष्टि से प्रभावकारी तेज निकलता था तथा वे सम्पूर्ण उपराम व योगयुक्त रहते थे। हमें भी उन जैसा फरिश्ता बनना है। पहले हम चर्चा करेंगे कि फरिश्ता क्या है?

हम निरन्तर विचार करते रहते हैं, आत्मा से निरन्तर संकल्पों की सूक्ष्म एनर्जी भिन्न-भिन्न रंगों के रूप में सम्पूर्ण देह में फैलती रहती है। जैसे-जैसे संकल्प वैसा-वैसा इनका रंग होता है। पवित्र व श्रेष्ठ संकल्पों से युक्त व्यक्ति का सूक्ष्म शरीर सुनहरा व श्वेत होता है। यह शरीर जैसी ही आकृति वाला होता है। इस तरह प्रत्येक आत्मा दो शरीरों में रहती है। एक तत्वों का स्थूल शरीर व दूसरा प्रकाश का सूक्ष्म शरीर। थोड़ी देर के लिये संकल्प करें कि मेरा स्थूल शरीर अलग हो गया और मैं आत्मा रह गई सूक्ष्म शरीर में, जिससे चारों ओर प्रकाश की किरणें फैल रही हैं।

सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप

किसी भी आत्मा की पवित्रता, निर्मलता व निश्छलता

जितनी-जितनी बढ़ती जाती है, सूक्ष्म शरीर उतना ही स्वच्छ व श्वेत होता जाता है। ईश्वरीय भाषा में कहें तो आत्मा जितनी-जितनी निराकारी, निर्विकारी व निरहंकारी बनती जाती है, उतना ही वह फ़रिश्ता बनती जाती है। ये तीनों धारणाएँ सम्पूर्ण आ जाने से आत्मा सम्पूर्ण फरिश्ते स्वरूप को धारण कर लेती है। तब सूक्ष्म शरीर का तेजस्वी व श्वेत प्रकाश चारों ओर इतना फैलता है कि उससे शरीर की स्थूलता भी समाप्त होने लगती है और अंग-अंग शीतल हो जाता है। ऐसा तपस्वी पूर्णतया उपराम व अनासक्त वृत्ति में रहता है।

फरिश्तों का किसी से कोई रिश्ता नहीं

इसका अर्थ है कि देह के रिश्तों की आकर्षण, उनके संकल्प, उनका बन्धन समाप्त हो जाता है। ऐसा नहीं कि वे संबंधों में नहीं रहते, रहते हैं परंतु जैसे कि वे मुक्त और अकेले हैं। इसके लिए सभी के प्रति आत्मिक दृष्टि व वृत्ति रखना परमावश्यक है। यह मेरा पति है, यह मेरा बच्चा है, इस दैहिक दृष्टि को बदलें। ये सब देव कुल की आत्माएँ हैं, सबका अपना-अपना पार्ट व अपना-अपना भाग्य है। इससे पूर्व जन्म में हमारे नाते अन्य आत्माओं से थे और

अगले जन्म में हमारे सम्बन्ध अन्य आत्माओं से होंगे। ऐसा अलौकिक भाव रखने के साथ अपने कर्त्तव्यों का पालन भी करें। यदि बच्चा बीमार है तो इलाज करायें परन्तु बिना डिस्टर्ब हुए। इस तरह की लम्बी साधना से सम्बन्धों का आकर्षण या बन्धन समाप्त हो जायेगा।

फ़रिश्ते डबल लाइट होते हैं

डबल लाइट होने के दो अर्थ हैं। प्रथम, मैं आत्मा ज्योति (लाइट) स्वरूप और दूसरा, मेरा शरीर भी लाइट का। डबल लाइट का दूसरा अर्थ है, मैं आत्मा लाइट व मन भी लाइट अर्थात् हल्का। पहले स्वरूप का भी हमें अभ्यास करना है व मन को भी हल्का रखना है।

मन को हल्का रखने की तीन विधियाँ अपनायें -

प्रथम- स्वयं की शक्तियों को पहचानें। हम परमात्म शक्तियों से सम्पन्न हैं। हमारे पास शक्ति है हर संकल्प को पूर्ण करने की। याद रखें, समस्या या परिस्थितियाँ हैं तो हम उनसे शक्तिशाली हैं। सब कुछ सहज हो जायेगा, सब कुछ ठीक हो जायेगा, ऐसे दृढ़ विश्वास के साथ स्वयं को हल्का करें। स्वयं को हल्का रखने का संस्कार बनायें।

दूसरा- जैसे ब्रह्माबाबा को शिवबाबा पर सम्पूर्ण विश्वास था, वे समस्याओं में एक बल एक भरोसे रहकर अटल रहे ऐसे ही हमारा साथी भी भगवान है। वह हजार भुजाओं सहित हमारे साथ है। उनके साथ होने से हमारी विजय निश्चित है, वह हमारी छत्रछाया है, हमारा कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता। सदा याद रहे, बाबा भगवान मेरे साथ है तो सदा निश्चिंत व हल्के रहेंगे। मन पर बोझ आये तो बाबा पर समर्पित कर दें।

तीसरा- ज्ञान की शक्तिशाली बातों का प्रयोग करके स्वयं को हल्का रखें। उसमें भी विश्व नाटक अर्थात सृष्टि रचना का सम्पूर्ण ज्ञान हमारे पास है। उसके द्वारा स्वयं को हल्का करें। कुछ बातों का अभ्यास करें। यह विश्व एक खेल की तरह चल रहा है, इसे देखने का आनंद लें। सब अपना-अपना पार्ट बजा रहे हैं, इसलिए सभी निर्दोष हैं, यह भाव अपनायें और जो कुछ हो रहा है, वही सत्य है, इन गुह्य रहस्यों को हृदयंगम कर हल्के रहें।

लम्बे समय तक हल्के रहने का अभ्यास करने से आन्तरिक शक्तियाँ बहुत बढ़ जायेंगी। याद रहे, यह हल्कापन है, अलबेलापन नहीं। यह रहस्य ध्यान में रखकर चलें कि जितना स्वयं हल्के होंगे, समस्याएँ भी हल्की हो जाएँगी व बीमारियाँ भी हल्की हो जाएँगी।

फ़रिश्ते निर्भय व शक्तिशाली होते हैं

मास्टर सर्व शक्तिवान के स्वरूप में लम्बे काल रहने से व विकारों पर जीत पाने से मनुष्य सम्पूर्ण निर्भय व शक्तिशाली हो जाता है। निर्भय होने का अर्थ बाह्य रूप से शक्तिशाली होना नहीं या क्रोध में भरकर रहना नहीं बल्कि इसका अर्थ है मन को शान्त कर देना। निर्भय माना परिस्थितियों में अचल-अडोल रहना, मृत्यु के भय से मुक्त व व्याधियों में शान्त व धीर-गम्भीर व सहनशील रहना, भूत-प्रेत, तंत्र-मंत्र से भयमुक्त, न निन्दा का भय न अपमान का, न सर्दी का, न गर्मी का, न सब कुछ नष्ट होने का भय। यह है निर्भय अवस्था। फरिश्ते ऐसे निर्भय होंगे तथा उनकी उपस्थिति मास्टर विश्वरक्षक का काम करेगी।

व्यर्थ संकल्पों से मुक्त होने के कारण व शक्तिशाली संकल्पों में लम्बा काल रहने के कारण वे बहुत शक्तिशाली बन जाते हैं। परिणाम स्वरूप उनकी शक्तियों के वायब्रेशन्स भटकती आत्माओं को मुक्तिधाम की राह दिखाते हैं, अनेक दु:खी आत्माओं को दु:खों से मुक्त करते हैं व विश्व को विघ्नों व समस्याओं से मुक्त करते हैं।

फ़रिश्ते सम्पूर्ण पवित्र व निर्मल होते हैं

माया के सभी स्थूल व सूक्ष्म स्वरूपों पर विजय, व्यर्थ व साधारण संकल्पों से भी मुक्त तथा श्रेष्ठ स्वमानधारी होकर रहने वाले सम्पूर्ण पवित्र बनते हैं। बिना लम्बा काल योगयुक्त रहे, कोई भी सम्पूर्ण पवित्र नहीं बन सकता। तो जिन्हें एक वर्ष में फ़रिश्ता बनने की दृढ इच्छा है, वे विशेष रूप से काम-क्रोध पर सम्पूर्ण विजय प्राप्त करें। मन को निर्मल करें। नि:सन्देह यह अखण्ड साधना के द्वारा ही सम्भव होगा।

फरिश्ते शुभ भावना व क्षमा भाव से पूर्ण होते हैं

जो तपस्वी छोटे विचारों से ऊपर उठ गया, जिसने मैंपन व स्वार्थ को जीत लिया, जो बेहद में स्थित हो गया, ऐसा महापुरुष ही विश्व कल्याण की भावना से ओत-प्रोत होकर फ़रिश्ता बन जाता है।

चेक कर लें, क्या हमारा मन सभी के लिए शुभ भावना से भरा है या उसमें दुर्भावना की दुर्गन्ध है? हम क्षमाशील हैं या बदला लेकर ही सुख पाने वाले हैं? भावनाएँ बदलें तो भाषा बदल जायेगी, प्रकम्पन बदल जायेंगे। फ़रिश्तों की शुभ भावना जग का कल्याण करेगी। उनकी शुभ भावना सबके लिये छत्रछाया व सहारा बन जाएगी। क्षमाभाव ही शक्तिशाली व महान आत्मा का लक्षण है, इससे चित्त निर्मल व शान्त होता है।

फ़रिश्ते सबके सहयोगी होते हैं व सबके होते हैं

आपदा में या बिल्कुल बेसहारे की स्थिति में या जब कुछ भी हल दिखाई न दे, तब यदि कोई मदद करता है तो लोग कहते हैं कि यह तो हमारे लिए फरिश्ता बनकर आया है क्योंकि फ़रिश्ते सबको मदद करते हैं और वे किसी एक के नहीं बल्कि सबके होते हैं।

जिन्हें फ़रिश्ता बनना है वे सबके सहयोगी बनें। दूसरों को तीव्र पुरुषार्थ में सहयोग करें, दूसरों की समस्याओं में सहयोग करें, दूसरों को विपदाओं में व व्याधियों में सहयोग करें व यज्ञ-सेवा में सहयोग करें। हमारी नेचर सम्पूर्ण सहयोगी की हो। एक को सहयोग करें, दूसरे को नहीं, यह फ़रिश्ते बनने वालों की पहचान नहीं। सहयोग के पीछे स्वार्थ हो, यह भी सहयोग नहीं है। सहयोग के बाद कुछ लेने की भावना हो, यह भी सहयोग नहीं।

सहयोग से स्नेह बढ़ता है, दुआएँ मिलती हैं व योगयुक्त रहने में मदद मिलती है। सहयोगी भावना माना देने की भावना, दाता की स्थिति। यह बाप समान स्थिति है।

फ़रिश्ते निर्बन्धन व निरहंकारी होते हैं

फ़रिश्ते तो मुक्त होते हैं, उन्हें कोई कैसे बाँध सकता है। जिन्होंने लंबे काल की अशरीरीपन की साधना से स्वयं को देह के बंधन से मुक्त कर लिया, वे सभी बंधनों से मुक्त हो जाते हैं। सबसे बड़ा बन्धन मन का बन्धन होता है। पाप कर्म करने वाले किसी के रोके नहीं रुक सकते, तब भला पुण्य करने वाली आत्माओं को कोई कैसे बाँध सकता है। कई मनुष्य स्वयं बन्धे रहते हैं और शिकायत करते हैं कि हमें इन-इन का बन्धन है। भगवान छुड़ाने आया है तो छूटो। माया से भी छूटो व व्यर्थ सोचने से भी मुक्त हो जाओ।

फ़रिश्ते सदा सन्तुष्ट व तृप्त होते हैं

फ़रिश्तों के आगमन से ही सर्व की मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं क्योंकि वे सभी इच्छाओं एवं कामनाओं से मुक्त सन्तुष्ट आत्मा होते हैं। सन्तुष्ट वे ही बनते हैं जो सर्व ईश्वरीय प्राप्तियों में भरपूर हो जाते हैं। भगवान को पाकर व उसके खजाने पाकर वे तृप्त हो जाते हैं।

भगवान मिला, उनसे परमसुख मिला, उनसे सम्पूर्ण ज्ञान मिला, उनसे शक्तियाँ व वरदान मिले, फिर चाहिए-चाहिए क्यों? योगीजन न तो मेरा नाम हो, यह इच्छा रखते, न शान से जीने के लिये वैभवों की इच्छा रखते। वे तो तृप्त होते हैं। इस कारण वे बेफिक्र बादशाह बन जाते हैं। यदि इच्छाएँ बहुत होती हैं तो मन भी बहुत भटकता है।

फरिश्ते स्वरूप के भिन्न-भिन्न अभ्यास –

सर्वप्रथम तो सूक्ष्मवतन में ब्रह्मा बाबा का दिव्य फरिश्ता स्वरूप देखें क्योंकि हमें बाप समान फ़रिश्ता बनना है। स्वयं को संकल्प दें कि ऐसा ही दिव्य मेरा भी फ़रिश्ता स्वरूप है। अपना स्वरूप भी वहाँ देखें कि मुझसे चारों ओर रंग-बिरंगी किरणें फैल रही हैं। जितना-जितना बाबा का व अपना फरिश्ता स्वरूप स्पष्ट दिखाई देगा उतनी ही इसकी अनुभूति सहज होती जाएगी।

रूहानी ड्रिल ऐसे करें- पहले स्वयं को मस्तक में चमकती हुई मणि देखें, फिर चलें देह से निकलकर सूक्ष्म वतन में, वहाँ बापदादा से मिलन करें। तत्पश्चात् सूक्ष्मशरीर यहीं छोड़कर निराकार आत्मा बन परमधाम में सर्वशक्तिवान के पास चलें। वहाँ रहकर पुनः सूक्ष्मवतन में

आकर अपने सूक्ष्म शरीर में प्रवेश करें, फिर फरिश्ते रूप में नीचे उतरें व स्थूल देह में प्रवेश करें। यह ड्रिल पाँच बार अवश्य करें। अमृतवेले इसे करने से योग में बहुत आनंद आयेगा।

ब्राह्मण सो फ़रिश्ता, फ़रिश्ता सो देवता का अभ्यास करें- अभ्यास करें... मेरे सामने एक ओर फ़रिश्ता शरीर है व दूसरी ओर देव रूप ... मैं आत्मा इस शरीर से निकल फ़रिश्ते रूप में प्रवेश कर लेती हूँ फिर उससे निकल कर देव स्वरूप में प्रवेश कर लेती हूँ। कुछ-कुछ देर तीनों रूपों में रहें। यह अभ्यास भी पाँच बार कभी भी करें। इस प्रकार तीव्र पुरुषार्थ करने से फ़रिश्ते स्वरूप के सुखद अनुभव होने लगेंगे। मैं लाइट हाउस फ़रिश्ता हूँ... यह स्मृति दिन में कई बार करें। स्मृति से स्वरूप बनता है। अभ्यास को ढीला न छोड़ें।

एक वर्ष का हमारा यह होमवर्क है। यह लक्ष्य भी हमें स्वयं भगवान ने दिया है क्योंकि वह स्थापना के कार्य की गति को 100 गुणा करना चाहते हैं। हम में से थोड़े योगी भी यदि फ़रिश्ते स्वरूप में आते हैं तो विश्व को बदलना सहज हो जाएगा। हमारा फ़रिश्ता स्वरूप विश्व के लिए वरदान बन जायेगा। हमारा बाप समान स्वरूप सबको बाप का साक्षात्कार करायेगा और इसी स्वरूप के द्वारा विनाश काल में दु:खियों के दु:ख हम दूर कर सकेंगे। ❖

तू सकल विश्व की माता है

ब्रह्माकुमार अवनीश रेनूकुट, सोनभद्र (उ.प्र.)

जगदम्बा, तू सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी, काली।
मीठी मम्मा बन करके तू सबको गोद उठाली।
तेरी यादों से माते, मन हर्षित हो जाता है।।
हे जगदंबे, जगजननी तू सकल विश्व की माता है।।

ब्रह्मा के कदमों पर तूने अपना कदम बढ़ाया।
शिव की श्रीमत पर चलके लक्ष्मी का पद पाया।
बरबस ही सबका चिंतन तेरी ओर ही जाता है।।
हे जगदंबे, जगजननी .....

बच्चा, वृद्ध रहे, कोई चाहे रहे जवान।
माँ बनकर देती थी तू सबको ही सम्मान।
नर-नारी, काला-गोरा हर कोई तुझको भाता है।।
हे जगदंबे, जगजननी .....

अतुल पालना थी तेरी, ममता थी बेजोड़।
तेरी दृष्टि पाने को लग जाती थी होड़।
तेरा हर बच्चा-बच्चा बस तेरे ही गुण गाता है।।
हे जगदंबे, जगजननी .....

झूठी प्रशंसा..पृष्ठ 22 का शेष

यह सुनकर संत ने मुसकराकर कहा, राजा ने तुम्हें इशारे में कुछ समझाया है। आटा तुम्हारी दरिद्रता दूर करने अर्थात् खाली पेट के लिए है, साबुन तुम्हारे दुर्गंधयुक्त शरीर की सफाई के लिए और खांड तुम्हारी कड़वी जुबान को मधुर बनाने के लिए भेजे हैं। उस दिन के बाद से वह व्यक्ति सुधर गया।

वस्तुत: दुष्टता का दमन विवेकपूर्ण सज्जनता, सहनशीलता व शुभभावना से ही संभव है। गुणों को बतलाने वाले के समान दोष दिखलाने वाला व्यक्ति मिल जाये तो ऐसे संग से कल्याण ही होता है।

शिव भगवानुवाच – जब तुम्हारी बुद्धि कल्याणकारी होगी तो सर्व आत्माओं की दुआयें भी तुम्हें प्राप्त होंगी क्योंकि जब लक्ष्य रहता है कि मैं तो हूँ ही विश्व कल्याणकारी तो अकल्याण का कर्त्तव्य हो ही नहीं सकता। जैसा कार्य होता है, वैसी ही धारणायें होती हैं। अगर यह कल्याणकारी कार्य याद रहे तो सदा रहमदिल व महादानी रहेंगे। हर कदम में कल्याणकारी वृत्ति से चलेंगे, मैंपन नहीं आयेगा, निमित्तपन याद रहेगा। इसलिए ऐसी कल्याणकारी आत्माओं को सर्व की दुआओं का अधिकार प्राप्त हो जाता है। ❖

जब स्वयं में परिवर्तन का अनुभव हुआ

● ब्रह्माकुमार अम्बिकेश्वर, जिला कारागार, गोरखपुर

मैं एक उच्च शिक्षित नवयुवक हूँ। मैंने बी.एस.सी. गोरखपुर विश्वविद्यालय से, एम.एस.सी. लखनऊ विश्वविद्यालय से, एम.बी.ए.चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से व जर्नलिज्म बॉम्बे कालेज ऑफ जर्नलिज्म, मुंबई से की। कुछ वर्ष बहुराष्ट्रीय कंपनियों में कार्य करने के पश्चात् पत्रकारिता के क्षेत्र में आ गया और डीडी न्यूज समेत कई मीडिया संस्थानों में कार्यरत रहा। मैं दहेज हत्या के आरोप में आजीवन कारावास की सजा भुगत रहा हूँ। मेरे ऊपर आरोप है कि दहेज के लिए मैंने अपनी पत्नी व दो मासूम बच्चियों को जलाकर मार डाला।

घर कर गई बदले की भावना

जब जेल में मैं अपनी वृद्ध बीमार माँ के साथ आया, उस वक्त मेरे अध्यापक पिता का स्वर्गवास हुए मात्र चार दिन बीते थे तथा ब्रह्मभोज व श्राद्ध कार्य होना शेष था। मैं विक्षिप्त अवस्था में था क्योंकि चार दिनों के अंदर परिवार के चार सदस्यों को खो चुका था। मैं हर वक्त यही सोचा करता था कि यह मेरे साथ क्या और क्यों हुआ? मेरी बीवी, मेरे बच्चे, मेरा कैरियर गया और सब कुछ खोकर जेल भी मैं ही काट रहा हूँ। आखिर ऊपर वाले का यह कौन-सा न्याय है? बार-बार मैं यही सोचा करता था कि आखिर यह मुझे किस अपराध की सज़ा मिल रही है? जो अपराध मैंने किया ही नहीं, उसकी सज़ा क्यों? मनोस्थिति बिगड़ जाती थी, चित्त अशांत हो जाता था। ईश्वर व उसकी सत्ता से विश्वास उठ जाता था। जेल में मैं सभी से यही प्रश्न करता था कि यह सज़ा मेरे किस गुनाह की है और क्यों? लोग समझाते, सांत्वना देते कि यह पिछले जन्म का फल है परंतु कोई भी पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं कर पाता था। मेरे अंदर बदले की भावना घर कर गई थी कि जिन लोगों ने मुझ बेकसूर को व मेरे

परिवार को बर्बाद किया है, उनको भी अवश्य बर्बाद करूँगा।

पूर्ण शान्ति का अनुभव

संयोग से मैं सिद्धार्थनगर जेल से गोरखपुर जेल में स्थानांतरित होकर आया और यहाँ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से दिये जा रहे ईश्वरीय ज्ञान द्वारा आत्मा के स्वरूप के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ। मुझे मेरे उन सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए जो कई वर्षों से अनुत्तरित थे तथा मन को अशांत किये हुए थे। **सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन मेरे अंदर यह आया कि बदले की भावना लोप हो गई। आज मैं पूर्ण शान्ति का अनुभव करते हुए विकारों से दूर रहकर ज्ञान मार्ग पर इस संकल्प के साथ अग्रसर हूँ कि जीवन भर संस्था के साथ जुड़ा रहकर जीवन को सार्थक करने का प्रयास करूँगा।** मेरे अंदर आज जो यह आंतरिक परिवर्तन आया है, उसका श्रेय जाता है संस्था की स्थानीय शाखा की निमित्त बहन को, सहृदय विचारवान वरिष्ठ जेल अधीक्षक श्री एस.के.शर्मा को, जेलर नामीलाल जी के सकारात्मक सहयोग तथा समर्पित ब्रह्माकुमार भाइयों के सानिध्य को जिनकी निष्काम सेवा के परिणामस्वरूप आज यहाँ (जेल में) अनेक कैदी भाई ज्ञान-वर्षा से अपने जीवन में चमत्कारिक परिवर्तन महसूस कर रहे हैं। ❖

मातृ-भाव का वरदान मिला

● ब्रह्माकुमारी विनोद, मेरठ

हम सन् 1962 में ज्ञान में आये। लौकिक पिता ने शरीर छोड़ दिया था इसलिए माता जी बहुत दुखी रहती थी। जब ईश्वरीय ज्ञान मिला उनके जीवन में शान्ति आ गई और आँसू बंद हो गये । इससे हमें भी इस ईश्वरीय ज्ञान का आकर्षण हुआ।

दृष्टि लेते देहभान नहीं रहा

ज्ञान में निश्चय होते ही मधुबन आने का मौका मिला। ब्रह्मा बाबा से पहली मुलाकात में ही लौकिक, अलौकिक और पारलौकिक तीनों पिताओं की भासना आई। प्रथम मुलाकात में ही बाबा ने मुझे 'माँ' का वरदान दे दिया। उस समय बाबा एक-एक ग्रुप के साथ भोजन करते थे। छोटे हॉल में हम सब बैठे थे। बाबा सबके सामने जाकर, उनकी ही प्लेट से गिट्टी उठाकर, उनके ही मुख में डाल रहे थे। उस समय मैं केवल 12 वर्ष की थी। जब बाबा मेरे पास आये तो मुझे लगा कि सबको गोद में लेने वाले बाबा, मेरी गोद में आ गये। मुझे ज़रा भी नहीं लगा कि बाबा इतने बड़े हैं, लगा कि कोई बच्चा गोदी में आया है। बाबा से दृष्टि लेते-लेते देह का भान नहीं रहा। उस समय से मेरा बचपन खत्म हो गया और मेरे अंदर मातृत्व के संस्कार आ गये।

जीवन बनाना है तो ऐसा

सन् 1962 में जब मम्मा मेरठ आई, उस समय हमारी स्कूल की परीक्षा चल रही थी। मम्मा से मुलाकात में उनके जीवन की दिव्यता, अलौकिकता ने मन को मोह लिया। मम्मा की दृष्टि मिलते ही संकल्प उठा कि जीवन बनाना है तो ऐसा ही बनाना है। लौकिक जीवन का लक्ष्य तो डॉक्टर बनने का था। मम्मा ने मेरे लक्ष्य को जानकर पूछा कि सिर्फ शरीर की बीमारी दूर करोगी या आत्मा को भी ठीक करोगी? उसी समय निर्णय किया कि शरीर की बीमारी ठीक करने वाले डॉक्टर तो बहुत हैं लेकिन मुझे तो आत्मा को निरोगी बनाने की सेवा करनी है। इसलिए शीघ्र ही यज्ञ में समर्पित हो गई। चौबीस जून, 1965 को जब मम्मा के शरीर छोड़ने का समाचार मिला तो महसूस हुआ कि अब अंतिम समय चल रहा है, पुरुषार्थ के लिए समय नहीं बचा है इसलिए कुछ दिन बाद अर्थात् 14 जुलाई को मैं सेन्टर पर रहने आ गई।

पालना के निमित्त बनी

मुझे सेन्टर पर आये एक ही मास हुआ था और देवता दादी को किसी कारणवश मुंबई जाना पड़ा तो पीछे से

मैंने तीन मास तक माता-भाव से सारी क्लास की पालना की। इसी प्रकार, मेरठ की कन्याओं की पालना की सेवा भी बाबा ने मेरे द्वारा कराई। जब मोदीनगर सेवाकेन्द्र पर आई तो मोदी परिवार की विशेष पालना के निमित्त बनी। वहाँ कन्याओं का हॉस्टल खुला जिसमें 42 कन्याओं की पालना का दायित्व मुझ पर था। इन सबसे मुझे बाबा द्वारा दिया गया मातृ-भाव का वरदान साकार होता नज़र आया।

सच्चाई और सफाई

मैं सदा ही बाबा के साथ सच्चाई और सफाई से चलती थी। अपनी लौकिक जीवन-कहानी भी बाबा को लिखकर दी थी। निश्चय-पत्र भी खून से लिखकर दिया। बाबा से बहुत बार मिली और हमेशा बाबा से शक्तियों, गुणों और वरदानों की प्राप्ति का अनुभव करती रही, अब भी करती हूँ। ❖

मुसीबत मजबूत बनाती है

● ब्रह्माकुमार गौरव, पंचकूला

जब कोई भी बड़ी मुसीबत सामने आती है तो कई बच्चे कहते हैं, बाबा, यह मुसीबत हम पर क्यों आती है। पर बच्चे यह भूल जाते हैं कि मुसीबत या कठिनाई ही हमें ईश्वरीय मार्ग में, ज्ञान में मजबूत व शक्तिशाली बनाती है और आगे बढ़ाती है।

सहने से बनते हैं निडर

कहा जाता है, छिपे गुण विपत्ति में सामने आते हैं और छिपे अवगुण असीम समृद्धि में सामने आते हैं। छोटे बच्चे को पहली बार जब साइकिल चलाना सिखाते हैं तो यह मालूम रहता है कि बच्चा गिर सकता है, बच्चे को चोट भी लग सकती है परंतु फिर भी सिखाते हैं क्योंकि हम जानते हैं, शुरू में दिक्कत आयेगी पर अगर बच्चा साइकिल चलाना सीख जायेगा तो आत्मनिर्भर हो जायेगा और भविष्य में सहज ही स्कूटर, मोटरसाइकिल या कार चला पायेगा। बच्चे द्वारा साइकिल से गिरकर, चोट खाकर, सहन किया गया कष्ट उसे जीवन-भर के लिए आत्मनिर्भर बना देता है, निडर बना देता है।

अपनी मेहनत से बढ़ता है आत्मविश्वास

एक बच्चे के पिता उसी स्कूल में प्राचार्य थे जिस स्कूल में बच्चा पढ़ता था परंतु उन्होंने कभी भी परीक्षा में या किसी मुकाबले में अपने पद का फायदा उठाकर बच्चे की नाजायज़ मदद नहीं की। वह बच्चा अपनी मेहनत व लगन से, कठिन परिश्रम से, मुसीबतों से लड़ता हुआ पढ़ाई में अच्छे नंबर लाता रहा और अन्य मुकाबलों में भी अव्वल आता रहा। बड़े होने पर उस बच्चे ने अपने प्राचार्य पिता का बहुत-बहुत शुक्रिया किया और कहा, पिताजी, अगर बचपन में आप मेरी नाजायज़ मदद करते तो शायद मैं इतना मेहनती, मज़बूत नहीं बनता और हमेशा आपको अपने सहारे के रूप में देखता लेकिन बचपन में आये कष्टों का सामना करने से अब मैं शक्तिशाली हूँ और आत्मविश्वास से भरपूर हूँ।

प्राचीनकाल में राजा-महाराजाओं के राजकुमारों की गुरुकुल में कड़ी से कड़ी परीक्षा ली जाती थी ताकि वे बहादुर और मजबूत बनें और हर मुसीबत का डटकर सामना कर सकें। कसरत करने वाले जितना ज्यादा वजन उठाते हैं, उतना शरीर मजबूत बनता है। हालाँकि ज्यादा भार उठाने में मेहनत व कष्ट भी ज्यादा होता है पर उसका फल मज़बूत शरीर के रूप में मिलता है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि विपत्तियों में व्यक्ति को उसकी पूर्ण क्षमता तक पहुँचाने की शक्ति होती है बशर्ते व्यक्ति उसके लिए मानसिक रूप से तैयार हो।

चींटी कभी हार नहीं मानती

संकट को सफलता में बदलने के लिए एक आवश्यक नियम है। सदा अपने लक्ष्य को अपने सामने रखो कि हर कीमत पर मंज़िल पर पहुँचना ही है। अपने आप से यह भी पूछें, इस संकट में, मुसीबत में मेरा कौन-सा गुण अधिक निखर कर सामने आयेगा, संकट का समाधान क्या है? मैं अपने लक्ष्य तक कैसे पहुँच सकता हूँ? अगर चींटी को गौर से देखें तो पायेंगे कि यह एक अद्‌भुत जीव है जो सदा अपना ध्यान अपने लक्ष्य पर केन्द्रित करती है और इसलिए कभी हार नहीं मानती। अगर चींटी के सामने कोई पत्थर, ईंट, पत्ता, छड़ी या कुछ भी बाधा रख दें तो यह दायें-बायें से या ऊपर चढ़कर या नीचे से पार हो जायेगी या अन्य तरीके से अपने लक्ष्य पर पहुँच जायेगी। चींटी कभी हार नहीं मानती, कोशिश करती रहती है। लक्ष्य का पीछा करती रहती है। चींटी केवल तभी कोशिश करना छोड़ती है जब मर जाती है।

इसी तरह यह देखा गया है कि जब किसी राजयोगी पर कोई कष्ट आता है तो वह परमात्मा पिता को पहले से ज्यादा याद करता है। कष्ट के पार होने के बाद उनका लाख-लाख धन्यवाद करता है कि इस कष्ट ने हमें अनुभवी बनाया और बाबा में निश्चय कई गुणा बढ़ा। इसको ऐसे भी कहा जा सकता है, जितने ज्यादा कष्ट, उतने ज्यादा अनुभवी और उतनी ज्यादा प्राप्ति। ❖

अभी नहीं तो कभी नहीं

● ब्रह्माकुमार चिराग, ठाणे (मुम्बई)

एक साधुजी घर-घर जाकर प्रेम और भाईचारे का संदेश देते थे। वे लोगों को सिखाते थे कि कैसे अपने मित्र-संबंधियों के साथ प्रेम से रहो, अपने आस-पास शान्ति बनाये रखो और अपने को भगवान के आगे समर्पित कर दो।

वे बड़े-बड़े लोगों से मिले, भाईचारे के संदेश की कई पुस्तिकायें बाँटी, चित्र और पोस्टर जगह-जगह लगवाये। हर जाति, धर्म, कुल, भाषा के व्यक्तियों को एकत्रित करके उनमें प्रेम का मंत्र फूँका। यह कार्य वे पिछले बीस वर्षों से नि:स्वार्थ भाव से कर रहे थे। किसी से कुछ माँगते न थे। हजारों लोग उसकी सेवा से प्रभावित हो उसके साथी-सहयोगी बन गये, उसके साथ भ्रमण करने लगे। उनको सेवा का अवसर प्रदान करते भी साधु जी न्यारे-प्यारे अनासक्त ही रहते थे।

एक बार वे एक साबुन फैक्ट्री के मालिक को संदेश देने उनके कार्यालय में पहुँचे। मालिक ने उनकी सेवाओं के बारे में विस्तार से जानना चाहा। साधु अपने सेवा कार्यों के आँकड़े तो न बता सके पर इतना ज़रूर कहा कि लाखों तक संदेश पहुँचाया गया है। मालिक ने पूछा, इन लाखों में से कितनों के जीवन में परिवर्तन आया है? साधु ने कहा, यह तो मैं ठीक-ठीक नहीं जानता, न ही जानना चाहता हूँ, मेरा काम है संदेश देना। मालिक ने कहा, आपको लगता नहीं कि आप अपना समय बर्बाद कर रहे हैं। पिछले 20 वर्षों में आप कुछ भी नहीं बदल पाये। समाज में लड़ाई-झगड़े, अशांति, दुर्भावनायें तो अभी भी हैं।

साधु जी कुछ देर शांत रहे। फिर बोले, आप फैक्ट्री में क्या बनाते हैं? मालिक ने कहा, साबुन। साधु ने पूछा, एक दिन में कितने बनाते हैं? मालिक ने कहा, एक लाख से भी अधिक। साधु ने फिर पूछा, क्या शहर की आबादी के लिए ये काफी हैं? मालिक ने कहा, उससे भी ज्यादा हैं। साधु ने कहा, फिर आपकी फैक्ट्री के बाहर खड़े कुछ लोग मैले और बदबूदार क्यों हैं? मालिक ने कहा, वे मेरा साबुन इस्तेमाल नहीं करते होंगे। मेरा काम है साबुन बनाकर बेचना। खरीदना और साफ होना उनका काम है।

साधु ने मुसकराते हुए कहा, ठीक कहा आपने। मेरा भी काम है भाईचारे का संदेश देना। संदेश को जीवन में उतारना उनका काम है। यह सुनकर फैक्ट्री मालिक निरुत्तर हो गया।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के भाई-बहनों से भी कई लोग यह सवाल करते हैं कि पिछले 75 वर्षों में आप कितने लोगों को बदल पाये हैं। अभी भी ना बदलने वालों की संख्या, बदलने वालों की संख्या से कई गुणा ज्यादा है।

इस प्रश्न के उत्तर में हम यही कहना चाहेंगे कि वर्तमान समय 9 लाख ब्रह्माकुमार भाई-बहनें जीवन को उच्च गुणवत्ता वाला बनाकर औरों के जीवन में गुणवत्ता भरने की सेवा पूर्ण समर्पण भाव से कर रहे हैं। वे तो सबको संदेश देते हैं पर यह लेने वालों पर है कि वे कितना ले पाते हैं।

विश्व परिवर्तन के इस रहे हुए थोड़े से समय में जो ईश्वरीय संदेश का लाभ उठा लेंगे, वे आने वाली दुनिया में देवी-देवता पद के भागीदार बनेंगे, जो किसी भी कारण का बहाना बनाकर स्व-परिवर्तन को टालते रहेंगे, वे वर्तमान की ईश्वरीय प्राप्तियों के साथ-साथ भविष्य की दैवी प्राप्तियों से भी वंचित ही रह जायेंगे। अत: संदेश देने वाले तो अपना कार्य कर रहे हैं। संदेश ग्रहण करने के लिए आत्मायें जागरूक बनें, यही शुभकामना है।

व्यवहार कुशलता

● ब्रह्माकुमारी पुष्पा, दिल्ली (पांडव भवन)

व्यवहार मानव जीवन का दर्पण है। एक ऐसा दर्पण जिसमें वह स्वयं को देख सकता है और अन्य भी उसे देख सकते हैं। व्यवहार वह कर्म है जिसका संबंध दूसरों के साथ रहता है। हमारा व्यवहार ऐसा हो जो दूसरों से दुआयें मिलें। दुआयें सबसे बड़ी ताकत हैं। दुआयें वह काम कर सकती हैं जो दवा या अन्य शक्ति नहीं कर सकती। हम जो दूसरों से चाहते हैं वही हम भी उन्हे दें तभी दुआओं के पात्र बन सकते हैं। इसमें तीन बातें विशेष ध्यान देने योग्य हैं – स्नेह, सहयोग, सहानुभूति

स्नेह

स्नेह बहुत बड़ा गुण है। स्नेही आत्मा सबका दिल जीत लेती है। तुलसीदास जी ने कहा है,

'तुलसी मीठे वचन से
सुख उपजे चहुँ ओर।
वशीकरण यह मंत्र है,
तज दे वचन कठोर।।'

प्रेम से व्यवहार में आना ही कुशलता है। कई व्यक्ति हमसे कुछ नहीं चाहते, केवल इतना ही चाहते हैं कि हम उनसे मीठा बोलें। कहावत है, गुड़ ना दो, गुड़ जैसा मीठा तो बोलो। प्रेम से बात करने में हमारा जाता ही क्या है? वाणी से हम मान दें, सम्मान दें, अपमान न करें। आज के समय में सब लोगों को सम्मान चाहिए। छोटा बच्चा भी अपमान सहन नहीं कर सकता। अपमान ने तो बड़े-बड़े युद्ध करा दिये। अपमानजनक व्यवहार बदले की भावना पैदा करता है। टोका-टाकी की आदत, गपशप की आदत बहुत नुकसान करती हैं। हँसी-मजाक भी एक सीमा तक अच्छा होता है जिसमें किसी का अपमान ना हो। बार-बार शिक्षा व नसीहत औरों को दें और स्वयं उन पर न चलें तो शिक्षा असरकारक नहीं रहती।

सहयोग

व्यवहार कुशल तब ही होते हैं जब अपने व्यवहार से दूसरों को सुख देते हैं। भगवान ने कहा है, सुख दो, दुख मत दो। स्वार्थ की भावना न हो। दूसरों के गुणों को देखना ही सबसे बड़ा सहयोग है। बुराई देखेंगे तो वही कर्म में आएगी। हम गुण देखेंगे तो दूसरा भी गुण देखेगा। अन्य की बातों को सुनें, समझें और समाएँ ताकि उनका आपमें विश्वास बैठ जाए। दूसरे का सहयोग भी अच्छे व्यवहार से मिलता है। शक और अनुमान व्यवहार में कुटिलता लाते हैं, संबंध तोड़ देते हैं। जो हमारी निन्दा करते हैं, उन्हें दुश्मन नहीं, मित्र समझना चाहिए क्योंकि वे हमारी बुराइयों को दर्शाते हैं।

सहानुभूति

मन की भावना दूसरों के प्रति शुभ हो, कल्याणकारी हो। जैसे को तैसा अर्थात् बदले की भावना ना हो। बुरे के साथ अच्छा करके दिखायें। यह है अच्छे व्यवहार की कमाल। अगर उसने बुरा किया और मैंने भी बुरा किया तो दोनों समान हो गये। फिर बड़ा कौन? महात्मा गांधी अपनी जीवनी में लिखते हैं कि जिस प्रकार शब्दों के अर्थ और बनावट को देखने के लिए डिक्शनरी इस्तेमाल करते हैं, उसी प्रकार व्यवहार को देखने के लिए मैं गीता को देखता हूँ। व्यवहार कुशलता और कर्म कुशलता का आधार परमात्मा से बौद्धिक संबंध है। परमात्मा से मन-बुद्धि जोड़ देने से कर्म श्रेष्ठ होते हैं। इसलिए भगवान कहते हैं, कर्म भी कर, योग भी कर, व्यवहार भी कर, परमार्थ भी कर। जब गुणों के सागर से संबंध होगा तो गुणवान बनेंगे। कर्म करना, देखना, सुनना श्रेष्ठ होगा। इंद्रियों पर संयम होगा। सत्यता, सभ्यता, दिव्यता आ जायेगी यही श्रेष्ठ व्यवहार है। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 atamprakash@bkivv.org